उम्मीदों की कहानियां

लड़को और पुरूषों द्वारा जेंडर असमानता व महिला हिंसा के खिलाफ की गई पहल

सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस (सी.एच.एस.जे.)
बेसमेंट ऑफ यंग वूमेंस हॉस्टल नं० 2
एवेन्यू 21, जी ब्लाक, साकेत, नई दिल्ली–110017
फोन : 91–11–26511425, 26535203, टेलीफैक्स : 91–11–26536041
ई–मेल : chsj@chsj.org, वेबसाइट : www.chsj.org

फेम झारखण्ड
फोन : 8340379778
ई–मेल : sparkranchi@gmail.com

छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ
फोन : 0651-2341222, 9504900583
ई–मेल : cssprog1968@gmail.com, css_sachi@yahoo.co.in

सहयोगिनी
फोन : 06542-238366, 9431145778
ई–मेल : sahyogini_gtm@rediffmail.com

सृजन फांउडेशन
फोन : 9431141106, 9431141046, 9472751906
ई–मेल : srijanfoundationjkd@gmail.com

द्वारा प्रकाशित
सहयोग : ओक फाउंडेशन
सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस, 2018
प्रकाशित वर्ष : 2018, द्वितीय संस्करण

लेखन व संपादन : महेन्द्र कुमार

कहानी रूपान्तरण : वंदना टेटे

मार्गदर्शन : सतीश कुमार सिंह, रिमझिम जैन, राहुल मेहता
रवि कुमार एवं हुसैन ईमाम फातमी

कहानी संकलन : अमित कुमार सिंह, धीरज कुमार एवं शेखर शरदेन्दु

प्रारूप व सज्जा : सी.एच.एस.जे. क्रिएटिव कम्युनिकेशन

मुद्रण : अग्रवाल प्रेस एण्ड प्रोसेस

केवल सीमित वितरण के लिए

उम्मीदों की कहानियां

लड़को और पुरूषों द्वारा जेंडर असमानता व महिला हिंसा के खिलाफ की गई पहल

विषय सूची

1. असहजता का टूटता जाल
2. शादी नहीं अभी पढ़ना है
3. परम्परागत सोच में आता बदलाव
4. अब हम समझने लगे हैं
5. नया नजरिया
6. टूटा दरवाजा
7. कहते हैं इमाम साहब
8. मन लगता है
9. कोरी धमकी
10. मन्नू की पहल
11. दोस्ती का असर
12. चलो दोनों मिलकर करें
13. शरमाना छोड़ भ्रांति तोड़
14. अब न मारूंगा, न मारने दूंगा
15. रिश्तों में परिवर्तन
16. सामूहिक पहल
17. खुलती राहें
18. बदलाव की शुरूआत
19. रमय का सहयोग
20. मेहमानी नहीं होगा
21. बेटी पर गर्व है
22. मान्यताओं का बदल ड़ालो
23. पिता का बेतरा
24. रूक गई पुतुल की शादी
25. बच्चों की जिम्मेदारी थोड़ी हमारी थोड़ी तुम्हारी
26. इसी तरह काम कीजिएगा कि नहीं?
27. सिलसिला आगे बढ़ता ही रहेगा ...
28. और एनम मान गई
29. हाथ बढ़ा मुस्कान लौटाया
30. नई परम्परा की शुरूआत

यह कहानिआं क्यों ?

यह पुस्तक ''उम्मीदों की कहानियां'' बदलाव के साथियों की कहानियों का दस्तावेज है जो खुद में बदलाव कर समुदाय के दूसरे लोगों को जागरूक करने का काम भी कर रहें हैं। इसलिए यह पुस्तक उन सभी साथियों को समर्पित है जो सामाजिक न्याय की दिशा में प्रयासरत हैं। जेण्डर गैर बराबरी, महिलाओं पर हिंसा के विरूद्ध आवाज उठाने, मर्दानगी के सकारात्मक पहलुओं का अभ्यास, देखभाल में जिम्मेदारी लेने तथा बच्चों के अधिकरों को सुनिश्चित करने वाले लड़कों व पुरूषों के प्रयासों को इस पुस्तक के माध्यम से रखने का प्रयास किया गया है। ये पुरूष अब, गैरबराबरी को बढ़ावा देने वाले विभिन्न सामाजिक मान्यताओं और मूल्यों के लिए चुनौती खड़ा करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

''उम्मीदों की कहानियां'' पुस्तक उन सभी पुरूषों को मददगार साबित होगी जो जेण्डर समानता के लिए खुद की जवाबदेही तथा जिम्मेदारी तय कर दूसरे पुरूषों को भी अपने प्रयासो में शामिल करना चाहते हैं। पुरूषों द्वारा अपने सोच व व्यवहार में बदलाव का परिवार के अन्दर विभिन्न रिश्तों में आये सकारात्मक बदलाव तथा समाज के स्तर पर पड़ने वाले व्यापक प्रभावों को कहानियों के माध्यम से समझा जा सकता है।

हम अपने उन सभी साथियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होने 'समझदार जीवनसाथी व जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के साथ जुड़कर स्वयं, परिवार व समुदाय स्तर पर सामाजिक न्याय के लिए सकारात्मक पहल शुरू किया है। हालांकि सामाजिक बदलाव के इन प्रयासों में कार्यक्रम से जुड़े पुरूषों को अपने परिवार व समाज के स्तर पर कई चुनौतियों व समस्याओं का भी सामना करना पड़ा, फिर भी वे इन प्रयासों में सतत रूप से लगे रहें। आज ऐसे पुरूष अपने दोस्तों, रिश्तेदारों के साथ–साथ अपने गांव व दूसरे गांवों में जहां भी उनकी पहुंच हैं बदलाव की इस बयार को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहें हैं।

बाल विवाह रोकने, लड़कियों व महिलाओं के साथ हिंसा रोकने, लड़कियों का स्कूल में दाखिला तथा महिलाओं की सार्वजनिक सेवाओं तक उनकी पहुंच, आवागमन व सीखने के मौके बढ़ाने आदि में समुदाय स्तर पर विभिन्न हितगामियों यथा पंचायत प्रतिनिधियो, सहिया, ए. एन. एम., आंगनबाड़ी सेविका, अध्यापकों, महिला समूहों आदि का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से समूह के सदस्यों को सहयोग मिलता रहा है जिसके लिए हम उन्हें भी धन्यवाद देते हैं।

हम सहयोगी संस्थाओं सृजन फाउण्डेशन, सहयोगिणी व छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ के साथियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस पुस्तक को तैयार करने में अपना मार्गदर्शन व अमूल्य योगदान दिया।

इस पुस्तक में शामिल की गई सकारात्मक बदलाव की कहानियों का मकसद साझा जानकारी व समझ को बढ़ाना तथा पुरूषों में बदलाव के लिए प्रेरित करना है।

कार्यक्रम के बारे में

जेण्डर समानता व बाल अधिकारों को सुनिश्चित करने की दिशा में किशोर लड़को व पुरूषों के साथ झारखण्ड राज्य के तीन जनपदों में 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम का संचालन किया गया। यह कार्यक्रम "ओक फाउण्डेशन" के सहयोग से सी.एच.एस.जे. नई दिल्ली द्वारा अपनी सहयोगी संस्थाओं सृजन फाण्डेशन–रांची, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ–गुमला व सहयोगिणी– बोकारो के साथ मिलकर चलाया गया है।

इस कार्यक्रम के तहत चयनित 30 गांवों में 13 से 18 साल के किशोर लड़कों व 19 से 45 साल के पिताओं को शामिल किया गया। गांव के स्तर पर लड़कों व पिताओं के समूह गठित किये गये। किशोर समूहों में 532 लड़के तथा पिता समूहों में 539 पुरूष जुड़े हैं। समूह का नेतृत्व करने के लिए उनके बीच से एक एनीमेटर का चयन किया गया जो अपने गांव में गठित दोनों समूहों का मार्गदर्शन व सहयोग करता है। एनीमेटर व संस्थागत फैसलिटेटर को मदद करने के लिए फेम सदस्यों के बीच से मेंटर चयनित किये गये, जो उन्हें समुदाय स्तर पर परियोजना के बेहतर क्रियान्वयन में जरूरी मदद व सहयोग देते रहे।

परियोजना कार्यकाल में हर त्रैमास में एनीमेटर्स व फैसलिटेटर्स के साथ जेण्डर, महिला हिंसा, मर्दानगी, देखभाल, बाल अधिकार, पैरोकारी, मातृत्व स्वास्थ्य, दस्तावेजीकरण व नेतृत्व विकास पर 28 दिवसीय सहभागी प्रशिक्षण के आयोजन किये गये। समुदाय स्तर पर समूह सदस्यों की विभिन्न विषयों पर जानकारी व समझ बढ़ाने के लिए रोचक तरीकों से हर माह शैक्षणिक सत्रों को संचालित किया जाता रहा है। इसके साथ ही विभिन्न स्टेक होल्डर्स के साथ समय–समय पर सम्पर्क व बैठकें, स्कूलों में बच्चों के साथ सत्र संचालन व प्रतियोगिताएं, समुदाय स्तर पर मुद्दे आधारित अभियान (एक साथ) चलाया गया। बच्चों व महिलाओं से जुड़ी विभिन्न सामाजिक समस्याओं की पहचान समुदाय के लोग खुद कर सकें तथा उनके निराकरण की पहल कर सके इसके लिए पी0आर0ए0 के माध्यम से गांव का रिपोर्ट कार्ड तैयार किया गया। जिसके बाद गांव के लोगों ने बदलाव का चार्टर तैयार कर सार्वजनिक स्थल पर लगाया और बदलाव हेतु सामूहिक प्रयास शुरू किये। पुरूष समूहों के इन प्रयासों में सहयोगी संस्थाओं के साथ–साथ स्थानीय स्तर पर गठित महिला समूहों, पंचायत, बाल सुरक्षा समिति आदि के सदस्यों का भी सहयोग मिलता रहा है।

इस परियोजना में शामिल सहयोगी संस्थाएं, फोरम टू इंगेज मेन (फेम) की सदस्य हैं जिससे इस परियोजना से बन रही सीख को समय–समय पर फेम नेटवर्क व अन्य संस्थाओं व नेटवर्को के साथ रखा जाता तथा उनका सहयोग लिया जाता रहा है। पूरी परियोजना के उद्देश्यों को पाने की दिशा में विभिन्न क्षेत्रों में अनुभव व विशेषज्ञता रखने वाले 5 सदस्यों के 'प्रोजेक्ट एडवायजरी ग्रुप' का सहयोग व मार्गदर्शन सभी

असहजता का टूटता जाल

जगन्नाथ नायक अब तक समूह की बैठक में नहीं पहुंचा था। सभी लोग उसका इंतजार कर रहे थे। लगभग सभी लोग पहुंच गये थे। 1 सितम्बर 17 को मासिक समीक्षा व नियोजन बैठक थी ऐसे में सभी एनिमेटर व फैसिलिटेटर का होना जरूरी था। बैठक 9 बजे से होनी थी और 10 बज रहे थे, जगन्नाथ का पता नहीं था तथा इस बैठक में सी.एच.एस.जे. से महेन्द्र कुमार भी पहुंच गये थे। पहले कभी ऐसा हुआ नहीं था कि कोई भी एनिमेटर बिना बताये या बिना सूचना के अनुपस्थित हुआ हो।

अंततः और इंतजार न करते हुए मींटिग शुरू किए जाने पर सहमति बनी। तभी फैसिलिटेटर ने सूचना दी कि जगन्नाथ से 9:30 बजे फोन पर बात हुई वह किसी आवश्यक काम में फंस गया था बस पहुंच ही रहा है। 10 बजकर 10 मिनट पर एनीमेटर जगन्नाथ नायक मींटिग में पहुंचे तब तक मींटिग शुरू हो चुकी थी। बैठक में सभी अपने–अपने कामों की रिपोर्टिंग, अपने अनुभव, बदलाव की कहानी और केयरिंग पर चर्चा कर रहे थे। उसी क्रम में जगन्नाथ ने केयरिंग पर अपना अनुभव बताया तो सभी लोग उनके इस पहल पर खुश हुए और जगन्नाथ की खूब प्रशंसा की। बाकी सभी लोगों ने अपना प्रयास सफल होता हुआ अनुभव किया।

जगन्नाथ सहयोगिणी संस्था के साथ 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के तहत एनिमेटर है और उसकी पत्नी हिना देवी आंगनबाडी सेविका है। दोनो कमलापुर गांव जो कि बोकारो के कसमार प्रखंड में है अपने बच्चों के साथ रहते हैं। उनकी बेटी लक्ष्मी भारती जिसकी उम्र लगभग 12 साल है, स्कूल जाती है तथा बड़ा बेटा अंकेश बोकारो में रहकर पढ़ाई करता है।
उनका बेटा सी.बी.एस.सी. बोर्ड से मैट्रिक का परीक्षा देगा। उनकी पत्नी बच्ची को खाना बनाने–सीखने के लिए, ज्यादा कूद–फांद नहीं करने के लिए, देर तक घर से बाहर नहीं रहने के लिए कहती रहती है। जगन्नाथ चाहता है कि बेटा–बेटी खूब पढ़े, खेले कूदे। पर समय से।

होली का दिन था। अंकेश अपने कमरे में बैठकर पढ़ाई कर रहा था। पिता समूह के सदस्य अजीत कुमार सिंह उनके घर आये। बच्चे को पढ़ते देख कहा– महिला हिंसा रोकने की बात करते हो यहां बाल हिंसा कर रहे हो। भला त्योहार के दिन भी कोई बच्चे को पढ़ाता है? चलो होली खेलने।

जगन्नाथ – ''नहीं भई, हम नहीं बोले हैं।'' बेटा ही बोला कि कुछ प्रश्न हल करा दें। परीक्षा नजदीक है। अच्छे से पास होना है।
अंकेश – ''चाचा आप हिंसा की बात कर रहे हैं? आप तो खुद हिंसा कर रहे हैं।''
अजीत – ''हम? कब? कैसे?''
अंकेश – ''हां आप। अभी ही तो। अभी आप बोले कि चलो होली खेलने।''

सब हंसने लगे। बच्चे भी बातों को समझने लगे हैं। इसलिए घर में माहौल अच्छा बन गया है।
पिता समूह के सदस्यों के पूरे परिवार के साथ सबने होली खेली। किशोर समूह के सदस्य भी वहॉ आ गए और सब मिलकर रंग–गुलाल खूब खेले। सबको यह होली याद रहेगा। अजीत बोले – अंकेश कुमार का परीक्षा अंक भी याद रहेगा।

एक दिन हिना देवी लक्ष्मी को कुछ काम करने के लिए आवाज लगा रही थी। लक्ष्मी सहेली के साथ खेल रही थी। बात नहीं सुनने पर हिना देवी नाराज होकर बोली – बात नहीं सुनती है। काम नहीं करेगी तो तुम्हारी शादी कर देंगे। लक्ष्मी नाराज हो गई उसने तपाक से बोला – ''शादी–शादी।'' बोलियेगा तो हम महेन्द्र अंकल से कह कर जेल का खिचड़ी खिलायेंगे।

जगन्नाथ जब घर आये तो दोंनो ने अपनी–अपनी शिकायत की। हिना – ''आप ही इसको सर पर चढ़ाए हैं, बात ही नहीं सुनती है। हमको तो कुछ समझती ही नही है। कुछ काम बोलो तो सुनती नहीं, करती नहीं।''

जगन्नाथ – ''अभी छोटी है, बड़ी होगी तो सीखेगी।''
लक्ष्मी – ''पापा देखिए न मम्मी हम ही को बोलती है काम करने, भैया को कुछ नहीं बोलती है। हम को बार–बार बोलती है शादी कर देंगे। मम्मी को बोलिए ऐसा नहीं बोलें। हम को अच्छा नहीं लगता है।''

जगन्नाथ हंसने लगे, कहा – ''हां भई, आप हमारी बेटी को बार–बार शादी कर देगे मत बोला कीजिए। अभी तो हमारी लक्ष्मी पढ़ेगी। जब बड़ी होगी तब काम करेगी और शादी का निर्णय खुद लेगी।'' लक्ष्मी खुश हो गई।
हिना – ''आप तो कुछ समझते ही नहीं। हमको भी पता है कि छोटी है ज्यादा काम नहीं कर सकती।''
आज हुआ यूं कि रोज की तरह बेटी को स्कूल भेजकर उसकी पत्नी 8 बजे आंगनबाडी

चली गई। जगन्नाथ 9 बजे की अपनी मीटिंग के लिए तैयार होने लगे, तभी बेटी के स्कूल से उसकी शिक्षिका का फोन आया कहा–''आप स्कूल आकर अपनी बेटी को घर ले जाएं।'' जगन्नाथ ने पूछा – क्यों? क्या हुआ? वह थोड़ा चिंतित हुआ। तब शिक्षिका ने कहा कि– 'आपकी बेटी को माहवारी शुरू हो गया है अतः आप उसे घर ले जाएं।''

जगन्नाथ जल्दी से स्कूल पहुंचा तो देखा कि बेटी रेस्ट रूम में बैठी है। वह बेटी को बाइक में बिठाकर घर ले आए। घर पहुंच बेटी से उसकी तबीयत पूछा तो बेटी ने बिना झिझक, बिना संकोच बताया– पापा मेरी माहवारी शुरू हो गई है, मुझे पैड (सेनिटरी नैपकिन) ला दीजिए। मेरे पेट में दर्द भी हो रहा है सो दवा भी दीजिए। जगन्नाथ, एक जिम्मेदार पिता की तरह तुंरत बेटी के लिए बहादुरपुर से सेनिटरी नैपकिन और पेट दर्द की दवा ले आया। बेटी को दिया और आराम करने के लिए कहा और इसके बाद मीटिंग में पहुंचा।

बेटी ने बिना झिझक, बिना संकोच बताया– पापा मेरी माहवारी शुरू हो गई है, मुझे पैड (सेनिटरी नैपकिन) ला दीजिए। मेरे पेट में दर्द भी हो रहा है सो दवा भी ला दीजिए। जगन्नाथ, एक जिम्मेदार पिता की तरह तुंरत बेटी के लिए बहादुरपुर से सेनिटरी नैपकिन और पेट दर्द की दवा ले आया।

जगन्नाथ और उसकी पत्नी दोनों खुश हुए। जगन्नाथ खुश है कि उसने एक जागरूक समझदार–जिम्मेदार पिता की भूमिका निभाई। उसकी बेटी ने बिना झिझक–संकोच के अपनी बात अपने पिता से साझा किया जिसे एक लड़की दूसरी लड़की से कहने में झिझकती है। एक पिता और एक एनीमेटर आज जेण्डर समानता और संवेदनशीलता लाने व दूसरो को समझाने में सफल रहा। पत्नी खुश हुई कि वास्तव में जगन्नाथ एक अच्छे पिता साबित हुए जिसने अपनी बेटी का विश्वास जीता। वह कहती है – सभी पिता को ऐसा करना चाहिए। घर–परिवार, समाज में बदलाव के लिए सभी पिताओं को ऐसा काम करना चाहिए कि घर की महिलाएं–बेटियां बिना किसी डर, शरम के अपनी बात या समस्या रख सकें।

18 दिसम्बर 2017 को रांची में तीनो जिलों के एनीमेटर, समूह सदस्यों व फेम (फोरम टू इंगेज मेन) सदस्यों के साथ वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया गया था। इस अधिवेशन में जगन्नाथ, उनकी पत्नी व बेटी भी शामिल हुई। जगन्नाथ ने अपने इन अनुभवों को उपस्थित सभी सदस्यों के साथ भी साझा किया और कहा कि इस कार्यक्रम से जुड़कर ही मैं बहुत कुछ सीख पाया व अपनी पत्नी व बच्चों के सहयोग से बदलाव करने का प्रयास कर पा रहा हूँ।

शादी नहीं अभी पढ़ना है

लवकुश मोचरो गांव जिला बोकारो का रहने वाला है। उसने देखा कि उसके पड़ोस वाले घर में बहुत सारे मेहमान आए हुए हैं। पता चला आशा को देखने लड़के वाले आये हैं। आशा, लवकुश की बहन सुमन की सहेली है। उसने अपनी बहन से पूछा – ''सुमन तुम्हारी सहेली किस क्लास में पढ़ती है?''
सुमन – ''नौंवी में।''
लवकुश – ''तब तो उसकी उम्र 18 साल तो नही ही होगी न।'' अच्छा सुमन क्या वो शादी करने के लिए तैयार है?
सुमन – ''नही, वह शादी नहीं करना चाहती पर घर के लोग नहीं मान रहे हैं।''
लवकुश ने अपने माता–पिता से इस बारे में बात किया तो उन्होने कहा – ''तुम्हारा क्या जा रहा है? दूसरों के मामले में मत पड़ो। तुम अपना काम करो।''

अपना काम? लवकुश ने कहा – ''मैं अपना काम ही तो कर रहा हूं।'' दरअसल लवकुश सहयोगिणी संस्था में एनीमेटर है। उसका काम समझदार जीवनसाथी व जिम्मेदार पिता समूह बनाना, लैगिंक समानता, बाल विवाह जैसी समस्या पर चर्चा करना, रोकने की पहला करना है। अर्थात समझाना और जागरूकता लाना। इसलिए जब उसके पिता ने कहा – अपना काम करो, तो लवकुश ने कहा – ''अपना काम ही तो कर रहा हूं।''

लवकुश अपने पड़ोसी अर्थात आशा के घर गया और उसके माता–पिता से बात कर उन्हे समझाना चाहा। किन्तु वहां तो सब उसे अपशब्द मतलब गालियां देने लगे। उसे धमकी देने लगे। कहने लगे– ''इतना अच्छा रिश्ता मिला है, बाद में नही मिलेगा।'' तुम ढूंढकर दोंगे आदि–आदि।
लवकुश ने उन्हे समझाने की कोशिश की कि यदि कम उम्र में आशा या किसी भी लड़की की शादी होगी तो आगे चलकर उसे शारीरिक, मानसिक कमजोरी होगी साथ

ही कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी। लेकिन आशा के माता–पिता मानने को तैयार ही नही थे। उल्टे लवकुश के घर पर आकर आशा के पिता हल्ला–गुल्ला, गाली–गलौज करने लगे। लवकुश के पिता ने कहा– ''जो समझते हैं उन्हे समझाओ, जो नहीं समझते हैं उन्हे मत समझाओ।''

तब लवकुश ने महिला मंडल और समाज सेवियों से मदद लिया अन्ततः आशा की शादी कैंसल हो गयी। कुछ दिनों बाद, लगभग डेढ़ महीने बाद की बात है एक दिन आशा की मां आयी और बोली – ''देखो शादी 18 साल में होगी लेकिन अखबार में मत छपवाना। नहीं तो हम महिला मंडल की सदस्य हैं, बदनाम हो जाएंगे।''

लवकुश इस मामले पर अभी भी नजर रखे हुए है ताकि आशा का ब्याह समय से पहले कम उम्र में न हो जाए। सुमन ने अपनी बहन को भी आशा से बात करते रहने को कहा है ताकि अगर उसे कोई परेशानी होती है तो मदद कर सकें।

सुमन और लवकुश के प्रयास से ही यह बदलाव आशा के परिवार में हो सका कि उन्होने अभी विवाह न करने का फैसला किया।

परम्परागत सोच में आता बदलाव

स्त्री और बच्चों के रोने के साथ किसी आदमी के जोर–जोर से चिल्लाने की आवाज आ रही थी। शाम का समय था सभी लोग अपने–अपने घरों की ओर लौट रहे थे। घरों में रात के खाना बनाने की जुगत हो रही थी। ऐसे में इस चीख–पुकार ने अमूल्य, सुधीर और सुधाकर का ध्यान खींचा और तीनों दोस्त उस जगह पर पहुंचे।

ये नजारा मोचरो गांव के रजवार मुहल्ले का था। झगरू रजवार नशे में धुत अपनी पत्नी और बच्चों पर बुरी तरह से चिल्ला रहा था, गालियां बक रहा था और पीट रहा था।

अमूल्य और उसके दोनों दोस्तों ने झगरू को पकड़कर रोका। उससे पूछा– ''क्यों मार–पीट रहे हो?'' बच्चों–औरतों को पीटना–मारना ये तो ठीक नहीं है। किसी भी तरह की हिंसा ठीक नहीं। तीनों ने उसे समझाने की कोशिश की। इस पर वह उन पर नाराज हो गया और उनको गालियां देने लगा। कहने लगा– ''मैं अपने बच्चे, अपनी पत्नी को पीटू–मांरू तुम्हारा क्या बिगड़ रहा है। मेरी पत्नी मेरे बच्चे, मैं चाहे जो करूं।'' फिर से गालिंया देनी शुरू की।

आस–पास के लोग भी इस समझाईश के दौरान वहां आ गये थे। भीड़ देखकर वह उन्हे सुनाने लगा कि – ''क्या जमाना आ गया है। हम अपने घर में अपनी पत्नी–बच्चे पर गुस्सा करें न करें अब लोग हमको सिखाएंगे। हम पर हुकुमत चलाएंगे। वाह रे जमाना।'' धीरे–धीरे वह शांत हो गया।

गांव में 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के तहत पिता समूह व किशोर लडकों का समूह है। पिता समूह के सदस्य हैं– अमूल्य, सुधाकर और सुधीर। इस समूह का एनिमेटर है लवकुश। समूह में नई सोच को लेकर, समाज में बदलाव को लेकर सिर्फ चर्चा ही नहीं होती प्रयास भी करते हैं। पहल होती है। इसीलिए जब पड़ोस में झगरू अपने घर में मारपीट कर रहा था। इन तीनों ने वहां पहुंचकर उसे

रोकने–समझाने की कोशिश की। नशा कोई भी हो, इंसान के सोचने–समझने की ताकत खत्म कर देता है। वही हालत झगरू की भी थी।

तीनों दोस्तों ने झगरू की गालियां–बड़बड़ाने से हार नहीं मानी। उन्होंने एनीमेटर से बैठक में इस घटना पर चर्चा की और तय किया कि उसे पिता समूह की मींटिग में बुलाया जाए। 3–4 बार बुलाने पर वह बहुत मुश्किल से बैठक में आया। तो सबने तालियों से उसका स्वागत किया। इस पर वह अचकचा गया, पूछा – ''ताली क्यों?'' समूह के सदस्यों ने कहा – ''एक तो आप को समूह में लाने में हम सफल हुए दूसरे कि आप आए, इसलिए।'' अर्थात हमारी मेहनत और आपका स्वागत दोनों के लिए ताली बजाया। बैठक में घरेलू हिंसा, लिंग समानता, समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता, देखभाल आदि पर चर्चा हुई। झगरू चर्चाओं को बड़े ध्यान से सुन रहा था पर बोला कुछ भी नही। बैठक खत्म होने पर झगरू ने धीरे से कहा– ''जब भी मींटिग हो तो हमको बुला लें हम एक बार में ही आ जाएंगे।''

अब झगरू मींटिगों में लगातार आने लगा है। धीरे–धीरे उसने घर में मारपीट करना बंद कर दिया है। बच्चों पर ध्यान देने लगा है। यह सब समूह में चर्चा का ही असर था। समूह के लोगों को खुशी है कि अब वह बदल रहा है।

एक दिन, सुबह के करीब दस बजे थे। झगरू अपनी पत्नी उर्मिला और 10 वर्षीय बेटे के साथ थैला लेकर बाजार जा रहा था। एनिमेटर लवकुश को पता था कि झगरू अपनी पत्नी के साथ बाजार हाट कभी नही जाता है। उन्हे साथ जाते देख उसे आश्चर्य हुआ और जान बूझ कर उसने आवाज लगाया – ''झगरू भैया आप तो हमेशा अकेले ही बाजार जाते थे लेकिन आज बीबी–बच्चा के साथ कैसे जा रहे हो। ऐसा कहते हुए मुस्कराया।''

झगरू – ''ऐसा है न भैया, शिक्षा का असर तो पड़ेगा न। बस वही है।''
लवकुश – ''हां, हां बिल्कुल जो सीखते हैं उसे जीवन में उतारना ही चाहिंए।''
झगरू – ''हम तो काम के बहाने बाहर घूम फिर लेते हैं। पर महिलाएं तो घर के काम में ही पिसती रहती हैं। उन्हे भी तो घूमने–फिरने की आजादी मिलनी चाहिए। नही तो चार दीवारी और काम के बोझ से वह भी थक जाती हैं। बाहर निकलने से मन हल्का होगा ही, घूमते–फिरते कुछ जरूरी सामान दिखे तो खरीददारी भी हो जाएगी। बच्चा भी दोंनो के साथ घूमेगा तभी तो सीखेगा। इसीलिए सब साथ जा रहे हैं।''
लवकुश – ''बहुत अच्छा कर रहे हैं।''
झगरू – ''आपका शादी तो नहीं हुआ है। होगा तो साथ में घुमाएंगे न?''
लवकुश – ''हां, हां घुमाएंगे। अभी मेरी गर्लफ्रैंड है उसके साथ घूमते किसी ने देख लिया तो फ्री में धुलाई हो जाएगी।'' दोंनों हंस पड़े।
लवकुश – ''अभी भी समाज की सोच में बदलाव नही आया है। साथ घूमेगे, साथ काम करेंगे तभी तो एक दूसरे को समझेंगे और साथ समय बिताने के लिए समय मिलेगा। झगड़ा भी नहीं शिकायत भी नहीं होगा।''

झगरू – ''हां, ठीक कह रहे हैं।''
लवकुश – ''अच्छा ठीक है घूम आइए हम बढ़ते हैं।'' कह कर वह अपने काम के लिए आगे बढ़ गया। वह सोचता हुआ जा रहा था कि अगर समाज में बदलाव लाना है तो हर पीढ़ी को, स्त्री–पुरूष की परम्परागत सोच को बदलना होगा। इसके लिए उदाहरण बनना होगा।

अभी कुछ आगे बढ़ा ही था कि वासुदेव रजवार अपनी पत्नी–बच्चों को लेकर रोड किनारे बस का इंतजार करता मिला। पूछा– ''सुबह–सुबह सबके सब कहां जा रहे हैं?''

बासुदेव बोला – ''अभी नही बताएंगे, शाम को लौटकर बताएंगे।'' लवकुश ने सोचा मायके पहुंचा कर लौटेगें तब बताएंगे।

शाम को वह चाय पीने उनके घर गया। चाय पीते हुए लवकुश ने पूछा कि – ''सुबह आप सब कहां जा रहे थे?'' उसका जवाब वासुदेव की पत्नी जो हाथ पोंछती बाहर आ रही थी ने मुस्कराते हुए दिया – ''हम लोग बोकारो नेहरू पार्क घूमने गए थे।''
लवकुश – ''अरे! यह तो बहुत अच्छी बात है।''
पत्नी – ''हां, महिना में जिस दिन ये काम पर नहीं जाते हैं उस दिन हम लोग कहीं–कहीं घूमने चले जाते हैं। सब पति लोग को ऐसा होना चाहिए। बीबी–बच्चा का ख्याल रखना चाहिए न। इससे मन भी खुश रहता है और घर में शांति भी रहती है, प्यार भी बढ़ता है।''

महिना में जिस दिन ये काम पर नहीं जाते हैं उस दिन म लोग कहीं-कहीं घूमने चले जाते हैं। सब पति लोग को ऐसा होना चाहिए। बीबी-बच्चा का ख्याल रखना चाहिए न। इससे मन भी खुश रहता है और घर में शांति भी रहती है, प्यार भी बढ़ता है।

लवकुश ने वासुदेव को छेड़ते हुए कहा – ''लेकिन आप तो पहले इतना समय नहीं देते थे। यह कहते हुए कि समय नहीं होता है। अचानक यह बदलाव कैसे? कब से?''
वासुदेव – ''यह बदलाव 'पिता समूह' की बैठकों से आया है। मुझे अपनी गलती महसूस हुआ। हरेक व्यक्ति, स्त्री–पुरूष, बच्चा सबकी स्वतंत्रता, इच्छा होती है। इसका सम्मान होना चाहिए। एक पिता और पति की जिम्मेदारी और फर्ज भी है केवल अधिकार नहीं।''
पत्नी – ''अब हम दोनो मिलकर घर–रसोई का काम करते हैं। साथ खाना बनाते, कपड़े धोते, घर साफ करते हैं।'' दोनो के चेहरे पर संतुष्टि, सम्मान और खुशी झलक रही थी। पिता समूह में जब इस बदलाव की चर्चा हुई तो सभी सदस्यों ने बच्चों और पत्नी की आजादी और इच्छा को समझने पर सहमति जतायी।

अब हम समझने लगे हैं

यह घटना कसमार प्रखंड के मोचरो गांव के बजरंगबली मंदिर के सामने बने शेड का है। तारीख है 2 फरवरी 2017, शाम होने से पहले यानि कि लगभग 2.30 बज रहे होंगे। कुछ लोग फुर्सत में थे जो शेड के नीचे बैठे गप्प–सड़ाका लगा रहे थे। इन्ही कुछ ग्रामीण लोगों के साथ प्रबोध रजवार, दीपक कपरदार, वासुदेव रजवार और मनोहर कपरदार भी देश–दुनिया, घर–समाज की छोटी–छोटी समस्याओं पर चर्चा कर रहे थे।

चर्चा के दरम्यान ही प्रबोध रजवार ने कहा – ''आज कल लड़कियों को पढ़ने की छूट क्या मिल गई, ये लोग तो आसमान छूने लग गयी। शादी ब्याह में भी पढ़ी–लिखी लड़की की डिमांड है इसलिए घर–परिवार, गार्जियन पढ़ा रहे हैं। लेकिन लड़कियां स्कूल–कॉलेज पढ़ने जाने के बदले घूमने–फिरने, लड़कों से दोस्ती और मोबाइल पर बातचीत पर ज्यादा ध्यान दे रही हैं। घर वाले सोचते हैं, पढ़ने गई है और इधर बेटी सज संवर कर घूम रही है। ये सब लक्षण ठीक नहीं है घर परिवार के लिए।''

शेड के बगल में ही चापाकल है। वहीं पानी भरने आये लवकुश ने ये चर्चा होते सुना। वह एनिमेटर है तो वह भी उस चर्चा में शामिल हो गया।

''प्रबोध भैया आप जो कह रहे हैं वह ठीक नहीं है।'' प्रबोध चिढ़ गया। उसने कहा – ''लो अब इ कल का लड़का हम सबको बताएगा कि का सही और का गलत है।''

लवकुश – ''इ तो पुराना सोच है कि लड़की बाहर गई तो बदमाश हो गई या उसका लक्षण खराब हो गया।'' सभी लोग उस पर भड़क गये। कहने लगे – ''देखते नहीं हो कि घर–परिवार की लड़कियां का कर रही है? का साबित करना चाहते हो?'' लवकुश – ''हम कुछ साबित करना नहीं चाहते। समझाना चाहते हैं। आप लोग हमारा समूह के बैठक में आइए। तो जो हम बोल रहे हैं समझियेगा, कि पुराना परम्परा, सोच में और

आज का सोच में क्या अन्तर है।''

सभी ग्रामीण नाराज होकर कहने लगे कि – ''बहुत काबिल बन रहे हो?'' तब सब की नाराजगी को देखते हुए लवकुश ने अपने साथी ननकू रजवार एवं अभिमन्यू को बुला लिया उनके साथ लोग भी आ गए। बात बढ़ती देख आस–पास के लोग जमा होने लगे। प्रबोध और उसके साथी कहने लगे – ''गुटबाजी करने लगा है, लड़ाई–झगड़ा करना है का?'' जितना लवकुश और साथी समझाते वे और भड़क जाते।

अंत में इन्होने तय किया कि अभी ये नहीं समझेंगे, समझने के लिए तैयार नहीं, मूड सही नहीं है। बाद में समझाने की कोशिश करेंगें यह सोच लवकुश अपने साथियों के साथ वहां से चला गया।

दूसरे दिन लगभग 8 बजे गांव में नये पुल के पास बैठ कर उनमें से कुछ लोग बातें कर रहे थे। उन्हे देख लवकुश अपने साथियों को लेकर, वहां सही मौका जानकर पहुंचा। कहा– ''कल तो आप लोग हमारी बात बिना पूरा सुने–समझे हम सब पर नाराज हो गये।''

लड़कियाँ पढ़ेंगी, घर से बाहर निकलेगी तभी तो उसके पास जानकारी होगी। कहां अस्पताल, कहां डाक घर, कहां थाना, कहां बस स्टैंड जानेगी।
तभी तो उसकी झिझक उसका डर खत्म होगा।

ग्रामीण – ''आज अगर उल्टा–सीधा बोले तो छोडेंगे नहीं।''
लवकुश – ''पहले हमारी बात सुन लीजिए, उसके बाद जो बोलना हो बोलिएगा। हमें मंजूर है।''
ग्रामीण – ''ठीक है बोलो।''
लवकुश – ''समय बदल गया है। इ बात तो आप भी मानते हैं। मानते हैं न?''

सबने सहमति में सिर हिला कर कहा।
लवकुश – ''आज के दिन अगर लड़कियों को पढ़ाएंगे नहीं, बाहर निकलेगी नहीं, बात–चीत नहीं करने देगें तो काम चलेगा?''
एक ग्रामीण – ''नहीं चलेगा।''

लवकुश – ''लड़कियां पढ़ेंगी, घर से बाहर निकलेगी तभी तो उसके पास जानकारी होगी। कहां अस्पताल, कहां डाक घर, कहां थाना, कहां बस स्टैंड जानेगी। तभी तो उसकी झिझक उसका डर खत्म होगा। सही है कि नही?''
''हां, सही है।''

लवकुश – ''अब देखिए, शुरू–शुरू में महिला लोग चुनाव लड़ के आयी तो जो उसका पति बोलता था वही बोलती–करती थी। लेकिन आज पढ़ी–लिखी हैं, मींटिग में जाती हैं, सुनती–समझती हैं, काम करती है। बोलती है भीड़ में भी। तो लोगों से मिलने–जुलने से जानकारी भी तो मिलती हैं। इससे आत्मनिर्भर भी तो होती हैं। है कि नही?''

''हॉ, सही है।''

लवकुश – ''इससे घर परिवार में मदद ही तो मिल रहा है। तो फिर जैसा बेटा वैसी बेटी। बेटा को पढ़ने, घूमने, मोबाइल रखने का छूट तो बेटी को भी छूट देना है, उस पर विश्वास करना है। है कि नहीं?''

''हां, देना चाहिए।''

लवकुश – ''यही तो हम लोग चाहते हैं और आप लोग भी। तो आप लोग आइए हमारे समूह में। आकर देखिए–सुनिए।''

इस घटना के बाद कई मींटिग में वो आए। 3 फरवरी की मींटिग में दीपक कपरदार, वासुदेव रजवार एवं मनोहर कपरदार आदि कुछ लोग आए, उन्होने कहा कि अब हमें समझ आने लगा है कि हम पुरूषों को क्या करना चाहिए? हमारी असल जिम्मेदारी क्या है? अब ये तीनो 'पिता समूह' के सदस्य हैं।

नया नजरिया

सिल्ली साड़म गांव में देवेन्द्र नाथ हेम्ब्रम अपने परिवार के साथ रहता है, यह गांव बोकरो जिले में है। वह एनीमेटर है और 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़ा है। समूह से जुड़कर उसने कई प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया है। स्त्री–पुरूष समानता की समझ ने उसे घर–परिवार को देखने का नया नजरिया दिया। कैसे?

एक दिन की बात है। देवेन्द्र अपनी पत्नी सुकुर मुनी देवी, अपने बेटे का कपड़ा धो रहा था। तभी उसकी पत्नी आयी और बोली – ''आप मेरे कपड़े मत धोया करो।''
देवेन्द्र – ''क्यो?''
पत्नी – ''लोग मुझे ताना मारते हैं और आप पर हंसते हैं, जो मुझे अच्छा नहीं लगता। आप अपना और बाबू का धोइए कोई बात नहीं, पर मेरा मत धोइए।''
देवेन्द्र – ''लोगों को हंसने दो। वो हमारी मदद थोड़े ही करते हैं। मुझे अच्छा लगता है। मदद ही तो करता हूं।'' ऐसे ही एक दिन देवेन्द्र ने अपनी मां से सब्जी बनाने के बारे में पूछा तो मां हंसने लगी। बोली – ''अब तुम सब्जी बनाओगे? लोग कहेंगे – ''देखो बेटे से काम करा रहे हैं। हम लोग क्या करेंगे?''

एक और दिन सुबह–सुबह देवेन्द्र को झाड़ू लगाते देख उसकी भाभी हंसने लगी। कहने लगी – ''कपड़ा तुम धोवोगे, झाड़ू तुम लगाओगे, खाना तुम बनाओगे। तब तो हम क्या करेंगे?''

अपने घर की तीन महिलाओं की बात सुनने के बाद देवेन्द्र को महसूस हुआ कि बात करना कितना जरूरी है। उसने तीनों को बैठाया और उनसे पूछा कि – ''बताओ कहां लिखा है या कौन बोला है कि पुरूष को क्या–काम करना चाहिए और औरत का क्या काम है? कहीं नही लिखा है। इसलिए दोनों को मिलजुल के काम करना चाहिए। खाली बैठे रहने से तो अच्छा है कि हम आपकी मदद करें। हम तो नहीं पूछते कि आप

लोग सब काम करते हैं तो हम क्या करें। दोंनों मिलकर, सब मिलकर काम करेंगे तो काम भी जल्दी होगा, आराम भी मिलेगा और हमें एक दूसरे से बात करने के लिए समय भी मिलेगा। जैसे घर के पुरूष कमाते हैं चाहो तो आप भी बाहर या घर में कमा सकते हो कुछ प्रशिक्षण लेकर।''

यह सब सुनकर देवेन्द्र की मां हंस कर बोली – ''जो तुम्हारी मर्जी करो।'' भाभी और पत्नी को अच्छा लगा। रात में पत्नी ने अपने मन की बात देवेन्द्र से कही कि उसे ब्यूटी पार्लर का काम सीखना है। उसको अच्छा लगा कि उसकी पत्नी ने अपनी इच्छा बताया। वह सहर्ष तैयार हो गया।

अब पति–पत्नी सुबह एक दूसरे के काम में हाथ बंटाते हैं। उठते ही देवेन्द्र बेटे को उठाकर नित्य कर्म कराते, ब्रश कराते हैं, पति–पत्नी दोनो मिलकर नाश्ता बनाते और करते हैं। फिर पिता–पुत्र नहाते तैयार होते हैं। पत्नी भी तब तक तैयार हो जाती है। पत्नी को उसके प्रशिक्षण केन्द्र में छोड़कर देवेन्द्र बच्चे को स्कूल छोड़ते हैं। स्कूल छुट्टी होने के बाद बेटा वही संभालते हैं फिर शाम 5 बजे तीनों घर लौटते हैं।

देवेन्द्र ने अपने कार्यो से घर में बदलाव लाया जिसे सबने स्वीकार किया। अब धीरे–धीरे गैर बराबरी वाले व्यवहार को वे छोड़ रहे हैं। आत्मसम्मान, सहयोग और स्वावलम्बन का पाठ पढ़ रहे हैं।

टूटा दरवाजा

आज बालिकाएं बहुत खुश हैं और हों भी क्यों नहीं। उनके पिताओं ने जो काम किया वह है ही ऐसा। कितने दिनों से क्या, कई महीनों से स्कूल में सभी लड़कियां परेशान होती थी। कई लड़कियां तो शौचालय नहीं जाना पड़े इसलिए स्कूल आते वक्त या टिफिन अवकाश के समय खाती भी नहीं थी, पानी तक नहीं पीती थीं कि शौचालय न जाना पड़े। अगर मजबूरी में जाना पड़े तो एक दरवाजे पर खड़ी रहती और दूसरी अंदर जाती। बदबू के मारे दोंनों सांस रोके रहतीं और जैसे–तैसे निपट कर भागती वहां से। इस स्थिति से उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य दोनो पर खतरा था।

यह हालत थी राजकीय बालिका मध्य विद्यालय, पोंडा, बोकारो की। वहां से गुजरते, आते–जाते 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़े सदस्यों ने कई बार इसे देखा। तब सभी ने फैसिलिटेटर शेखर को इस स्थिति से अवगत कराया। एनिमेटर रामसाय की पहल पर 4 सितम्बर 2017 को हेडमास्टर से इसकी शिकायत भी की, आग्रह भी किया। तो उन्होने एक सप्ताह के अंदर शौचालय मरम्मत एंव साफ–सफाई करवाने का आश्वासन दिया।

पिता समूह के लोग इसके लिए पंचायत सचिवालय पंहुचे और स्थानीय मुखिया सुमित्रा देवी और पूर्व मुखिया को इस

महीनों से स्कूल में सभी लड़कियां परेशान होती थी। कई लड़कियां तो शौचालय नहीं जाना पड़े इसलिए स्कूल आते वक्त या टिफिन अवकाश के समय खाती भी नहीं थी, पानी तक नहीं पीती थीं कि शौचालय न जाना पड़े। अगर मजबूरी में जाना पड़े तो एक दरवाजे पर खड़ी रहती और दूसरी अंदर जाती। बदबू के मारे दोंनों सांस रोके रहतीं और जैसे-तैसे निपट कर भागती वहां से। इस स्थिति से उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य दोनो पर खतरा था।

मामले से अवगत कराया और हस्तक्षेप करने की मांग की।
रामसाय – ''मुखिया मैडम थोड़ा स्कूल के शौचालय का दरवाजा लगवा दें।''
मुखिया – ''क्या पूरा टूट गया है?''
रामसाय – ''सिर्फ टूटा ही नही है गंदा भी है। ऐसे कब तक चलेगा? बच्चों को कहीं मूत्र संक्रमण की बीमारी न हो जाए। बच्ची लोग जाना न पड़े बोलकर पानी नहीं पीती हैं और पेशाब रोक कर रखती हैं।''
मुखिया – ''ऐसी हालत है? तब तो बच्चे बीमार भी होंगे और स्कूल जाना छोड़ देंगे। आप लोग निश्चिंत रहे हम जल्दी ही स्कूल प्रबंधन को बोल कर ठीक कराते हैं।''

अन्ततः 13 सितम्बर 2017 को विद्यालय प्रबंधन ने विद्यालय कोष से शौचालय में नया दरवाजा लगाया। साथ ही बालक–बालिका दोनों के शौचालय को साफ करवाया गया। इस त्वरित कारवाई से पिता समूह और बच्चे–बच्चियां सभी खुश हुए। गांव के लोग भी पिता समूह की पहल से खुश हुए।

कहते हैं इमाम साहब

बोकारो जिले का बनकनारी गांव मुस्लिम बहुल गांव है। वहां के इमाम साहब बहुत समझदार, नेकदिल और तरक्की पसंद इंसान है। इसी गांव में एनिमेटर सोहराब अन्सारी भी रहते हैं। उसने 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़कर 'पिता समूह' और 'किशोर समूह' का गठन किया है।

सोहराब अपने समाज में बच्चों और महिलाओं के प्रति सोच और स्थिति से वाकिफ है। समूह बैठक के बाद एक दिन वह इमाम साहब से मिलने गया।
दुआ सलाम के बाद इमाम साहब ने पूछा – ''सब खैरियत तो है?''
सोहराब – ''हां, सब खैरियत से है।''
इमाम साहब – ''आज इधर कैसे आना हुआ? आपका काम कैसा चल रहा है? क्या चल रहा है आजकल?''
सोहराब – ''काम सब बढ़िया चल रहा है। सोचा इधर से निकल रहा हूं तो मिलता चलूं।''

दोनों की बात धर्म, राजनीति से शुरू होकर घर–परिवार पर केन्द्रित हो गयी।
इमाम साहब – ''जितना हम आगे बढ़ रहे हैं हमारे यहां मार–पीट, तलाक का मामला भी बढ़ रहा है। अब देखिए कि फोन पर ही लोग लड़ने लगते हैं, चिल्लाते हैं। फोन पर शादी, फोन पर तलाक। ये ठीक नहीं हो रहा है। आदमी अपने में सिमट रहा है। उसको किसी से कोई मतलब नहीं। बच्चों को देखिए मां–बाप से पैसे लेकर खरीद लिया मंहगा–सस्ता मोबाइल बस, उसी में घुस गया। न पढ़ना–लिखना न खेलना–कूदना। किसी से कोई मतलब नहीं। आदमी लोग अपने ही टेंशन में, बीबी बच्चा घर पर तो ध्यान नहीं। सब पैसा–पैसा कर रहा है। समाज, घर–परिवार से तो मेल, प्रेम, सौहार्द सब खत्म हो रहा है।''
सोहराब – ''आप सही कर रहे हैं। सब टेंशन में हैं, सबको जल्दी है। धीरज नाम की

चिड़िया तो उड़ गयी है। इस पर भी आपको सामाजिक बैठक में बात रखना चाहिये। पैसा कउड़ी तभी काम आएगा जब घर में सब ठीक रहेगा। घर का आदमी खुश रहेगा तो पैसा भी काम आएगा, फलेगा, सही जगह खर्च होगा।''

इमाम साहब – ''हां। घर परिवार में कलह, अशांति रहने से कुछ ठीक नहीं रहता है।''

सोहराब – ''आज कल किसी भी काम में स्त्री–पुरूष का भेदभाव करना ठीक नहीं। लड़का पढ़े तो बेटी भी पढ़े। लड़की काम करे तो लड़का भी। घर–बाहर दोनों का। बेटी लोग को भी आगे के लिए जमाना के हिसाब से तैयार करना होगा। अपने पैर में खड़ा करने का सोचना होगा।''

इमाम – ''सही है। दोनों को स्वस्थ, शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाना जरूरी तो है ही दोनों एक दूसरे का सहयोग भी करेंगे, सम्मान दें यह सोच भी बनाना होगा तभी तो जिदंगी हंसी–खुशी बीतेगी। जैसे साइकिल का दोनों चक्का ठीक होने से आराम से चलता है। हम जरूर इस पर सामाजिक बैठक में बात करेंगे।''

काम में स्त्री-पुरूष का भेदभाव करना ठीक नहीं। लड़का पढ़े तो बेटी भी पढ़े। लड़की काम करे तो लड़का भी। घर-बाहर दोनों का। बेटी लोग को भी आगे के लिए जमाना के हिसाब से तैयार करना होगा। अपने पैर में खड़ा करने का सोचना होगा।

सोहराब आश्वस्त होकर चला गया। लेकिन उसे कुछ दिन बाद पता चला कि इमाम साहब ने बैठक में जब से लैंगिक समानता पर बात की है कुछ लोग उन्हे 'इमाम' पद से हटाने की बात कर रहे हैं। बैठक में बहुत से लोग भड़क गये थे, कह रहे थे कि – ''औरतों को छूट देंगे तो वो बिगड़ जांएगी।'' कुछ कह रहे थे कि घर का काम भी हम करेंगे तो औरतें बाहर कमाएंगी क्या? अब क्या हमें औरत की कमाई खानी होगी?

तब समूह के सदस्य शमीम ने गांव के लोगों को समझाया, उन्हे शांत कराया। इमाम के पक्ष में खड़े होकर बात की।

आज इमाम साहब गांव में ही हैं। बच्चों को पढ़ाने के साथ–साथ नई सोच डालने का प्रयास कर रहे हैं।

मन लगता है

चार बजे से किशोर समूह की बैठक है। सभी बच्चे समूह में हंसी–मज़ाक करते हुए जमा हो रहे थे। एनिमेटर लवकुश रज़वार के आने पर बैठक शुरू होगी। बैठक में किशोर बच्चों की समस्याओं पर चर्चा होती है। घर, स्कूल, दोस्त, शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून अधिकार आदि ढेर सारी बातें और खेल भी, हंसी मज़ाक भी। एनिमेटर उन्हें अपना दोस्त और गार्जियन दोनों लगता है। अब वे धीरे–धीरे उससे खुलकर बातें करने लगे हैं।

बच्चों ने देखा लवकुश आ रहा है, समूह में हरकत हुई एक–दूसरे को सूचना दिया। बैठक के लिए सभी उसके पहुंचने से पहले बैठ गये। पास पहुंचने पर अभिवादन का आदान–प्रदान हुआ। उसने बैठते हुए सभी बच्चों से पूछा – ''और क्या खबर है? सब ठीक है?''

बच्चे – ''हां भैया, सब ठीक है।''

लवकुश – ''किसी को हडबड़ी तो नहीं है?''

बच्चे – ''नहीं, कोई हडबड़ी नहीं भैया।''

लवकुश – ''तो शुरू करें?''

बच्चे – ''हां।''

लवकुश – ''पिछली बैठक में हम लोग शिक्षा पर बात कर रहे थे। कि सबको शिक्षा या पढ़ाई करना चाहिए, कैसे अपना नियम बनाना है कि खेलना, पढ़ना और घर के कामों में मदद करना भी हो जाए। आज बताईए आप लोगों का मन लगता है पढ़ने में कि नही?''

कुछ बच्चों ने उत्साहित होकर बोला – ''मन लगता है भैया।'' एक – ''हमको हिंदी में मन लगता है।'' एक – ''गणित हमको भारी लगता है फार्मूला याद नही होता।'' दूसरे ने कहा – ''फिजिक्स–केमेस्ट्री तो सिर में घुसता ही नहीं।'' एक ने कहा – ''इतिहास हमको तो अच्छा लगता है पर चीन का इतिहास में उनका नाम ही याद नहीं होता।''

इन सब के बीच लवकुश ने देखा लखन कपरदार और राहुल कपरदार चुपचाप दूसरों को बोलते देख–सुन रहे थे।

लवकुश – ''क्या हुआ लखन, राहुल तुम लोग चुप क्यों हो? तुम्हें पढ़ना अच्छा नहीं लगता?''

दोनों सवाल से सकपका गए। ज़वाब दूसरे बच्चों ने दिया – ''भैया दोनों स्कूल नहीं जाते हैं।'' इस पर कुछ बच्चे हंसे, कुछ गंभीर रहे। जैसे अपने साथियों का स्कूल न आना उन्हे बुरा लगता है।

लवकुश – ''क्यों भई, क्यों नही जाते?''

एक – ''भैया लखन अपने मामा के घर रहता है।''

दूसरा – ''भैया राहुल बकरी चराने जाता है।''

लवकुश ने बच्चों से कहा– ''तुम लोग चुप रहो। राहुल और लखन ही अपने बारे में बताएंगे। हां तो बोलो क्यों नहीं जाते हो? कोई दिक्कत है? बताओ हम सब लोग मदद करेंगें। क्यों? कहते हुए उसने बच्चों की ओर देखा।''

सबने कहा – ''हां, हां हम मदद करेंगे और दोनों की ओर देखने लगे।''

राहुल – ''हम पहले स्कूल जाते थे। दस महीना हुआ स्कूल छोड़े। पिताजी के पास पैसा नही है इसलिए अब नहीं जाते हैं। पिताजी बोलते हैं बकरी चराओ। घर में बकरी है।''

लखन – ''हम भी पहले जाते थे। सातवां तक पढ़े हैं पर अब नहीं जाते हैं। कापी नही था तो मास्टर साहब बहुत डांटे थे।''

लवकुश – ''तुम मामा के यहां रहते हो? तुम्हारा घर कहां माने कि तुम्हारे माता–पिता कहां रहते हैं?''

लखन – ''हम मामा के घर रहते हैं और मेरे पिताजी अंगबाली के पास बहरागोड़ा में रहते हैं, पेटरवार ब्लाक पड़ता है।''

लवकुश – ''तो तुम लोग पढ़ना चाहते हो कि नहीं?''

दोनो – ''पढ़ना चाहते हैं।''

राहुल – ''पर पिताजी के पास पैसा नहीं है।''

लवकुश ने शेष बच्चों की ओर देखा और उनसे पूछा – ''तो हमें अपने इन दोस्तों की मदद करनी चाहिए कि नहीं?'' सभी ने एक साथ कहा – ''हां करनी चाहिए।'' लवकुश मुस्कराया और पूछा – ''कैसे करनी चाहिए?''

कुछ बच्चे – ''स्कूल में बात करना होगा।''

कुछ बच्चे – ''माता–पिता, घर वालों को समझाना होगा।''

लवकुश – ''सही पकड़े हैं।'' कह मुस्कराया। चलो, यह ठीक हुआ ऐसा ही होगा। फिर बच्चों के अधिकार पर चर्चा करने के बाद सभी अपने–अपने घर चले गए। लवकुश ने 'पिता समूह' से इसकी चर्चा की और कुछ सदस्यों के साथ दोनो के घर गए। उन्हे समझाया।

लखन के मामा को तो कोई दिक्कत नहीं थी वह तो खुश हुए पर राहुल के पिता ने कहा– हमारे पास पैसा नही है और घर में बकरियां हैं उसकी देखभाल करेगा तो कुछ पैसा भी आ जाएगा। समूह के सदस्यों और लवकुश ने उन्हे शिक्षा के महत्व के बारे में समझाया और कहा हम स्कूल में एड़मिशन करा देते हैं आप कापी किताब, फीस, ड्रेस की चिंता न करें। उसके पिता जी राजी हो गये।

आज दोनों बच्चों का फिर से स्कूल में दाखिला करा दिया गया है। दोनो बच्चों को किताब–कापी, ड्रेस आदि दिला दिया गया। साथ ही उन्हे ताकीद करते हुए समझाया कि स्कूल नहीं छोड़ना है। कोई दिक्कत हो समूह में चर्चा करना है। ताकि सब मिलकर हल निकालें।

उन दोनों के साथ समूह के सभी बच्चे खुश हैं।

कोरी धमकी

तीन साल की भतीजी के जोर–जोर से रोने की आवाज सुनकर फैसिलिटेटर शेखर शरदेन्दु जब कमरे से बाहर निकला तो देखा भाई की पत्नी उसे धप–धप पीट रही है। उसने उसे मना किया– ''क्यों मार रहे हैं, मत मारिये।'' पर उसने उसे अनसुना कर दिया और पीटती रही।

शेखर को बच्चों से लगाव है बच्चे भी उनसे सहज रहते हैं। जब सुबह मना करने पर भी भाई की पत्नी बच्ची को पीटती रही तो उसे बहुत खराब लगा और गुस्सा आया। उसने तुरन्त ही अपने माता–पिता एवं भाई से इस विषय पर बात की और कहा कि ऐसे ही वे वेवजह बच्चों को मारते–पीटते रहेगें, तो वह घर छोड़ देगा। यह एक कोरी धमकी थी।
शेखर – ''तीन साल का बच्चा कितना समझदार होगा? बड़े तो समझते ही नही हैं। जिद करता है तो इ उसका बचपना है। प्यार से समझाओ तो मान जाता है बच्चा। डांट–फटकार, मार–पीट से तो और जिद्दी हो जाते हैं।'' धमकी का थोड़ा असर बाद में दिखा।

शेखर 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के प्रशिक्षणों में जो सीखते हैं उसे लागू करने की कोशिश करते हैं ताकि सिर्फ बोलकर ही नहीं व्यवहार से भी लोग सींखे और सिखाएं।

घर में बच्चे खुश हैं कि पापा को चिकन बनाना आ गया। शेखर ने चिकन बनाना अपनी पत्नी से सीखा। अब तो वह पत्नी के संग खाना बनाना, झाड़ू लगाना, बर्तन–कपड़े धोना अर्थात घर के कामों में भी हाथ बंटाते हैं। यह देख बच्चे भी घर के कामों में मदद करते हैं। अपनी पत्नी ही नही बल्कि भाई और उसकी पत्नी की भी मदद वो करते हैं। अभी कुछ दिन पहले भाई की तबियत खराब हुई तो उसने ही घर–अस्पताल संभाला।

शेखर कोशिश करते हैं कि रात का खाना सब मिलकर खाएं। पहले, घर के पुरूष बच्चे और अंत में महिलाएं खातीं थीं।

घर पड़ोस में शेखर लगातार स्त्री–पुरूष सहभागिता, लैंगिक समानता पर बातचीत करते हैं। अपने गांव के अनुज कपरदार के बारे में एनिमेटर से जानकर कि वह शराब पीकर पत्नी के साथ मारपीट करता है, उससे बात किया, समझाया। लगातार समझाने का असर है कि अनुज ने शराब छोड़ा नहीं पर कम कर दिया है। हां अब पत्नी पर हाथ नही उठाता है।

शेखर ने चिकन बनाना अपनी पत्नी से सीखा। अब तो वह पत्नी के संग खाना बनाना, झाड़ू लगाना, बर्तन-कपड़े धोना अर्थात घर के कामों में भी हाथ बंटाते हैं। यह देख बच्चे भी घर के कामों में मदद करते हैं।

लेकिन समाज में स्त्री–पुरूष समानता पर बोलने की वजह से शेखर को कमेंट सुनना पड़ता है। लोग कहते हैं कि अब पुरूष बाहर के साथ घर का भी काम करेगें और औरत आराम करेगी? इन सबसे बिना घबराये शेखर कहते हैं कि ''जैसे–जैसे प्रशिक्षण में सीख रहा हूं, घर में, समूह में व समाज में उतारने की कोशिश कर रहा हूं।'' वह चाहते हैं कि जैसे वे पति–पत्नी, बच्चे खुश हैं बाकी भी रहें। परिवार में सबकी इच्छा का सम्मान हो, सहभागिता हो।

मन्नू की पहल

मन्नू उरांव रांची जाने के लिए तैयार हो रहा था। अचानक उसने सुचिता को स्कूल ड्रेस में देखा तो चौंक गया। मन्नू ने उसे आवाज दिया और पूछा –''कहा जा रही हो स्कूल ड्रेस में?'' सुचिता ''आज से परीक्षा शुरू है तो स्कूल जा रहे हैं।'' मन्नू यह सुनकर खुश हुआ।

मन्नू उरांव 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़ा है, वह एनिमेटर है। मन्नू सिसई प्रखंड के सैंदा गांव में रहता है। यह गांव गुमला जिले में पड़ता है। सुचिता भी इसी गांव में रहती है। सुचिता के पिता का नाम जट्टा उरांव है वह किसान है तथा ईट भट्ठा में मजदूरी भी करता है। सुचिता की उम्र 16 वर्ष है वह उच्च माध्यमिक विद्यालय बांस टोली में पढ़ती है।

एक दिन मेरी दीदी बहुरी देवी जिसका विवाह हो चुका है अपने साथ तीन महिलाओं और दो युवकों के साथ आयी। थोड़ी देर बात–चीत के बाद उन लोगों ने जट्टा उरांव के घर जाने की इच्छा जताई। मन्नू ने पूछा –''कोई खास काम है क्या?'' तो उन्होने कहा –''उसकी लड़की का रिश्ता लेकर आए हैं। अगर उन्हे रिश्ता पंसद आएगा तो शादी कर देंगें। तब मन्नू ने कहा –''लेकिन उसकी बेटी, तो अभी शादी लायक हुई ही नही है।'' तब भी वे उसके घर जाने की जिद्द करने लगे। उनका कहना था कि –''अच्छा देखते हैं, जब आ ही गए हैं तो मिल लेते हैं। रिश्ता पंसद आना न आना तो बाद की बात है। इसके बाद वे जट्टा के यहां चले गए।

संयोगवश उस दिन जट्टा घर पर नहीं था। घर पर उसकी बेटी सुचिता और उसकी मां ही थे। मेरी दीदी ने उन्हे उनके घर आने का कारण बताया। कुछ देर बात–चीत करने के बाद वे लोग अपने गांव लौट गए।

जब जट्टा घर लौटा और उसे बेटी का रिश्ता आने की जानकारी मिली तो वह बहुत खुश हुआ। वह शादी के लिए राजी हो गया। लेकिन घर में उसने न तो अपनी पत्नी

से बात किया न ही बेटी से पूछा।

इस बात का पता चलने पर मन्नू ने अपने पिता समूह के सदस्यों से चर्चा किया कि उन्हे क्या करना चाहिए। समूह में बाल विवाह के दुष्परिणाम, कानून आदि पर अच्छी समझ बनी है। अतः सभी की सुचिता की शादी रोकने और उसके माता–पिता से बात करने पर सहमति बनी।

सभी जट्टा से मिले और उसे समझाने की कोशिश की। लेकिन उसने साफ मना कर दिया और कहा– 'मेरी बेटी है जब चाहेंगे, जहां चाहेंगे शादी देंगे। तुम लोगों को दिक्कत क्या है? साथ ही वह वहां से उठकर चला गया और लड़के के घर बात करने जाने की तैयारी करने लगा।

इसके पहले कि जट्टा लड़के के घर पहुंचे। समूह के सदस्यों ने तय किया कि लड़के वालों से बात किया जाए उन्हे समझाया जाए, शायद वो लोग मान जाएं। लेकिन यहां भी निराशा ही हाथ लगी, उन्हे अपने बेटे की शादी सुचिता से ही करनी है।

जब दोनो घर वालों ने मना कर दिया तो समूह के ही एक सदस्य ने सलाह दी कि क्यों नहीं हम सीधे सुचिता से बात करें। इस पर सबने विचार किया और सुचिता से बात की। उसे बाल विवाह (कम उम्र में शादी) के नुकसान के बारे में बताया और कहा यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है, वह शादी से मना कर दे। डरने या शरम करने से कुछ नहीं होगा। वह मान गई। उसने अपनी मां सुखना देवी से कहा – ''उसे अभी शादी नहीं करना है।'' इतना सुनना था कि उसकी मां ने उसे डांटा और कहा – ''अगर तुम शादी नहीं करोगी तो तुम्हारे पिता तुम्हें जान से मार देंगे।'' यह सुनकर सुचिता उदास हो गई और बिना बताये अपनी नानी के घर चली गई।

तब इस समस्या पर समूह के सदस्यों ने अपनी पत्नियों से बात किया। इस का फायदा उन्हे मिला। सबने अपने–अपने स्तर पर सुचिता और उसकी मां को समझाया। इसका असर यह हुआ कि सुचिता की मां मान गई और उसने भी अपने पति जट्टा को बेटी की शादी अभी नहीं करने के लिए बोला – ''सुचिता शादी से मना कर रही है तो हम लोगों को शादी नहीं देना चाहिए।''
जट्टा बोला – ''क्यों, उसके मना करने से क्या होता है?'' उससे हम पूछे हैं? पूछ के शादी करेंगे? अच्छा घर परिवार है और क्या चाहिए?
सुखना – ''घर परिवार तो अच्छा है पर सुचिता अभी छोटी है। दो–चार साल बाद कर देंगे। अभी तो 8 वां में ही पढ़ रही है।''
जट्टा – ''तुमको कौन सीखा रहा है उ मन्नू? बड़ा होशियार बन रहा है। मेरी बेटी है हम कर रहें है इसकी शादी उ कौन होता है?'' उसे ऐसा ही लग रहा था। वह मन्नू पर बहुत गुस्सा था।

एक दिन उसका गुस्सा सामने आ ही गया। वह शराब पीकर, नशे में चिल्ला–चिल्ला कर मन्नू को उसके दरवाजे के बाहर खड़ा होकर गालियां दे रहा था। यह सब सुनकर आस–पास के लोग और समूह के सदस्य जमा होने लगे तो वह गालियां देता हुआ वहां से चला गया।

इसके बाद से उसने मन्नू और गांव वालो से बात करना बंद कर दिया। इन सब की खबर लोगों ने लड़के वालों को दे दिया कि अब शादी नहीं होगी। अब सुचिता खुश है। मन्नू और समूह के सदस्य भी खुश है।

लगभग 2–3 सप्ताह बाद सुचिता की दादी से मन्नू मिला जिसकी उमर 70 साल है। वह अकेले घर में खाना बना रही थी। पता चला कि जट्टा और उसकी पत्नी भट्ठा में काम करने के लिए पलायन कर चुके हैं। दादी ने मन्नू से कहा – ''अगर तुम नहीं होते इसकी शादी हो जाती। सुचिता अभी पढ़ना चाहती है। तीन–चार साल शादी नहीं करना चाहती।'' दादी शादी नहीं होने से खुश है।

इस घटना को हुए तीन महीने हो चुके थे। जब सुचिता को फिर से स्कूल जाते देखा तो पूरी घटना मन्नू के आंखो के सामने से फिर एक बार गुजर गया।

दोस्ती का असर

गजेन्द्र उरांव कभी अपने दोस्तों के साथ मिलकर रास्ते में लड़कियों को छेड़ना, उनके ऊपर कमेंट करना जैसी हरकतें करता था। पर अब ऐसा नही करता अपने दोस्तो को भी ऐसा करने से रोकता है। धीरे–धीरे वह बदल रहा है। यह बदलाव उसमें 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में जुड़ने से आ रहा है। ऐसा वह खुद भी महसूस करता है।

गजेन्द्र उरांव, गुरूगांव, सिसई का रहने वाला है। इस कार्यक्रम में वह एनिमेटर के पद पर काम करता है। वह आयोजित प्रशिक्षण में जाता है। उसे वहां अच्छा लगता है। वहां उसे बहुत सारी जानकारियां मिलती है जिसे वह अपने पिता समूह और किशोर समूह में बताता है। सिर्फ बताता ही नहीं अपने व्यवहार में भी लाने का प्रयास करता है।

उसके समूह में उसका दोस्त शनि उरांव भी है। वह भी गुरूगांव में अपनी पत्नी और 9 महीने के बच्चे के साथ रहता है। उसकी शादी को दो साल हो रहे हैं। शनि 26 वर्ष का है। उसके घर में उसकी मां और बहन भी रहती है। शनि भी पहले हम उम्र लोगों की तरह घर के कोई काम नहीं करता था। बिना वजह इधर–उधर घूमना, गप्प करना उसकी आदत थी। मां–बहन–पत्नी से उसे कोई मतलब नहीं था। यहां तक की बच्चे को भी वह गोद नहीं उठाता था। गजेन्द्र जब कभी उनके घर जाता और उसकी मां–बहन से पूछता तो नाराजगी से कहती – ''क्या पता कहां है? घूम रहा होगा कहीं या बैठा ताश खेल रहा होगा।'' कभी पत्नी कहती – ''हमको थोड़े न बता कर जाते हैं।'' गजेन्द्र के पूछने पर कि – ''क्या बेटा को सम्भालता है?'' मां और पत्नी कहते – ''क्या संभालेगा, गोदी तो करता ही नहीं है।''

गजेन्द्र के कहने पर शनि पिछले 6 महीने से पिता समूह की बैठकों में आने लगा है। लगातार आने, गजेन्द्र से मिलने और गांव वालों के साथ–साथ संस्था वालों से उसकी

विभिन्न विषयों पर बातचीत होती है। पिता समूह के सदस्यों में अच्छा तालमेल है। सब एक दूसरे से अपनी समस्या साझा करते हैं। सिर्फ अपनी ही नहीं गांव वालों की भी।
समूह में जब मर्दानगी, स्त्री स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल, जेंडर समानता पर बात होती तो सभी जिज्ञासा वश अपने सवांल रखते थे। जिसे संस्था के लोग सरल तरीके से सुलझाते थे।

शनि भी पहले हम उम्र लोगों की तरह घर के कोई काम नहीं करता था। बिना वजह इधर-उधर घूमना, गप्प करना उसकी आदत थी। मां-बहन-पत्नी से उसे कोई मतलब नहीं था। यहां तक की बच्चे को भी वह गोद नहीं उठाता था। गजेन्द्र जब कभी उनके घर जाता और उसकी मां-बहन से पूछता तो नाराजगी से कहती - "क्या पता कहां है? घूम रहा होगा कहीं या बैठा ताश खेल रहा होगा।" कभी पत्नी कहती - "हमको थोड़े न बता कर जाते हैं।"

इन सब का असर उनके अपने जीवन में भी अब दिख रहा था। शनि अब घूमता कम है और अपनी मां–बहन–पत्नी–बच्चे के साथ समय बिताता और बातें करता है। घर के काम जैसे झाड़ू लगाना, बर्तन धोना भी करता है। अपने बच्चे को लेकर वह खेलता और उसे घूमाता–फिराता है।

एक दिन गजेन्द्र ने उसे फुटकल पेड़ से फुटकल साग तोड़ कर लाते देखा तो पूछा – अच्छा! कब से तुम ये सब कर रहे हो? वह बोला– ''यार, तुम लोग सही काम कर रहे हो। घर में इस तरह काम करने से माहौल ही बदल जा रहा है।'' सब खुश हैं और हम भी खुश। शनि ने कहा – थैंक्स दोस्त, तो गजेन्द्र को बहुत खुशी हुई।

चलो दोनों मिलकर करें

लेंगा उरांव की उम्र 29 वर्ष है वह अपनी पत्नी बिरसमुनी बारला और दो बेटो के साथ गुरूगांव, पोस्ट सकरौली जिला गुमला में रहता है। गांव में पिता समूह और किशोर समूह है और लेंगा भी इसका सदस्य है। गुरूगांव के समूहों में मींटिग करने के लिए संस्था से धीरज आते हैं तथा एनिमेटर गजेन्द्र शामिल रहते हैं। लेंगा को समूह में शामिल होने के लिए गजेन्द्र ने ही काफी प्रोत्साहित किया।

समूह में जुडने के बाद से लेंगा के व्यवहार में बहुत बदलाव आया है। वह वह पत्नी के साथ अपने छोटे बेटे को लेकर आंगनबाडी टीकाकारण कराने जाता है।

एक दिन पत्नी के साथ खाना बनाने के लिए जब रसोई में गया और कहा – तुम भात बना दो हम सब्जी बना लेते हैं तो यह सुनकर बिरसमुनी को हंसी आ गयी। वह आश्चर्य से बोल – ''क्या बोले? आप सब्जी बनाएंगे।'' जिस तरह से वह बोली और उसका चेहरा बना उसे देखकर लेंगा को भी हंसी आ गई। ''हां हमको भी सब्जी बनाना आता है।'' लेंगा बोला। बिरसमुनी – अच्छा आज से पहले तो आप रसोई भी घुसते भी नही थे। प्यार, आश्चर्य और व्यंग मिले इस बात से लेंगा बोला – ठीक है तो चले जाते हैं, बनाओ तुम। झट बिरसमुनी बोली – ''नही–नही, आप सब्जी बनाईये। हम भात बना लेते हैं।''

इसके बाद से दोनों मिलकर खाना बनाते। साथ–साथ काम करते। झाडू लगाना, अपना और बच्चों का कपड़ा धोना, बर्तन धोना आदि। बड़े बेटे के साथ कुएँ में जाकर नहाना–नहलाना, उसे तैयार कर स्कूल पहुंचाना, पढ़ाना। सब काम अब दोनो मिलकर करते तो उनके पास समय भी खूब होता। दोनों के मन में एक दूसरे के लिए प्यार और सम्मान भी बढ़ गया।

ऐसे फुर्सत में जब दोनों बैठे तो बिरसमुनी ने पूछा – ''आप यह सब कहां से सीखे?''

लेंगा – ''क्या सब?''

बिरसमुनी – ''यही सब, घर का काम करना। काहे कि शादी का इतना बरस हो रहा है ऐसा तो आप नहीं किए थे पहले।''

लेंगा – ''तुमको अच्छा लगता है कि नही।''
बिरसमुनी – ''अच्छा, बहुत अच्छा लगता है। इसीलिए तो पूछ रहे हैं, और लोग को भी सीखना चाहिए इ सब।
लेंगा – ''इ सब माने?''
बिरसमुनी – ''यही घर का काम, बीबी–बच्चा का देखभाल करना। अब आप गुस्साते भी नहीं हैं ज्यादा। गुस्साते हैं तो भी अच्छा से बात करते हैं। इससे दुःख भी नही होता है। गलती भी समझ में आ जाता है। हमको भी आपको भी।''
लेंगा – ''इ जो गजेन्द्र आता है उसका बात तो सुनती हो न। ऐसा ही जो 'पिता समूह' है वहां जाने से सुनने–समझने को मिलता है। एक दिन समूह में औरत–मर्द का काम का लिस्ट बना रहे थे तो समझ में आया। मर्द लोग से कितना ज्यादा काम करती है औरतें।
बिरसमुनी – ''तो भी सुनना पड़ता है कि का करती हो दिन भर घर में। बैठल रहती हो, बैठल–बैठल खाती हो और न जाने का–का।''
लेंगा – ''हां, यह तो गलत बात है। सही हमको भी लगा। हमको घर का काम, रसोई का काम करना, साफ–सफाई करना अच्छा लगता था। शादी से पहले हम करते थे लेकिन सब मेरा हंसी उड़ाता था कि का लड़की जैसा करते हो। उसके बाद हम छोड़ दिए थे। लेकिन अब समझ में आ गया। ऐसा ही पहले ही कोई समझाता तो कितना अच्छा होता।''

तभी गजेन्द्र पहुंचा तो कुछ बातें अंदर आते–आते उसने भी सुन लिया था। कहा – ''जब जागे तभी सवेरा।'' गजेन्द्र ने पूछा – ''बाजार चलना है?'' इधर से निकल रहे थे तो सोचे पूछ लेते हैं।
लेंगा ने पत्नी से पूछा – ''कुछ लाना है?''
बिरसमुनी याद करती हुई बोली – ''हां लाना तो है, सब्जी, नमक और..... कहती हुई अंदर कमरे में थैला लेने गई।''
लेंगा – ''और? और क्या?'' लेंगा भी तैयार होने अंदर गया।
बिरसमुनी दुविधा में थी बोले न बोले।
लेंगा – ''और क्या? क्या लाना है?'' उसकी दुविधा देख वह समझ गया।
लेंगा ने पूछा – ''पैड लाना है?''
बिरसमुनी ने संकोच से सिर हिलाया।
लैंगा – ''अरे! जैसा और जरूरत का सामान बाजार से लाते हैं वैसा ही इ भी तो है।'' कहकर थैला लिया और गजेन्द्र के साथ बाजार के लिए निकल गया।

लेंगा में यह बदलाव अच्छा लगने लगा था बिरसमुनी को। लेंगा बिरसमुनी को भी महिला समूह में, ग्राम सभा में जाने को कहता। दोनों साथ जाते भी थे। पिता समूह से सीखी हुई बातें वह बिरसमुनी को बतलाता। बिरसमुनी, लेंगा का दोस्त हरिचरण पिता समूह का सदस्य था, कि पत्नी को भी महिला समूह और ग्राम सभा में साथ ले जाती। उनकी देखा–देखी अन्य महिलाए भी अब गांव की बैठको में, महिला समूह में जाने लगी थी। बिरसमुनी में धीरे–धीरे नेतृत्व का गुण भी आने लगा था।

शरमाना छोड़ भ्रांति तोड़

फैसलिटेटर धीरज कुमार छारदा गांव में समूह की बैठक के लिए जब भरत गोप के घर के पास से गुजरे, तो उन्होने देखा, कि वह अपने घर का शौचालय साफ कर रहे हैं। इसमें उनकी मदद पानी देकर पत्नी कर रही थी। फैसलिटेटर ने इसे देखकर सोचा, असर दिख रहा है। बदलेगा सब कुछ प्रयास करते रहना है।

35 वर्षीय भरत गोप छारदा गांव प्रखंड सिसई जिला गुमला का रहने वाला है। वह अपनी पत्नी सुमित्रा देवी और तीन बेटों के साथ रहता है। भरत के घर का माहौल भी पहले उन घरों की तरह था जहां पत्नी का काम है घर–बच्चे संभालना, सबकी देखभाल करना, खाना–बनाना–खिलाना, धोना, मांजना। पूरा का पूरा काम। भरत पानी भी पीना हो तो स्वंय लेकर नहीं पीता था, पत्नी या बच्चे को आवाज लगाता था। उसकी सोच थी, पत्नी तो काम और सेवा करने के लिए होती है।

फैसलिटेटर एवं एनीमेटर ने गांव में पिता समूह एवं किशोर समूह का गठन किया है। यह समूह गठन 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के द्वारा किया गया है। छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ नामक सामाजिक संस्था इस कार्यक्रम को चलाती है।

गांव के और भी लोग पिता समूह में हैं और बैठकों में जाते हैं। भरत भी इस समूह का सदस्य है। लेकिन उसे शुरूआत में बैठक में अच्छा नहीं लगता था, पर अब वह आता है, बैठता है और चर्चाएं सुनता है।

धीरे–धीरे उसके स्वभाव में परिवर्तन दिखने लगा। अब वह चर्चा में भाग लेता, सवाल–जवाब करता। समझने की कोशिश करता। अब वह धीरे–धीरे धीरज से खुलकर बातें भी करने लगा है। बातचीत से उसकी समझदारी बढ़ने लगी है।
अब वह अपनी पत्नी की मदद घर के कामों में करने लगा है। खाना बनाना, बर्तन–कपड़े धोना। बच्चों को नहलाना–धुलाना, पढ़ाना, स्कूल पहुंचाना और उनसे

खेलना। अब बच्चे भी अपनी समस्या या किसी तरह की इच्छा माता–पिता दोनों से करते है। पहले कुछ चाहिए होता तो सिर्फ मां से ही मांगते या जिद्द करते थे। पिता से जिद्द करने पर उन्हे मार या डांट पड़ती थी। कभी–कभी तो पिता बात सुनते ही नहीं थे सीधे मार देते थे। इस बदले हुए व्यवहार से पत्नी–बच्चे सभी खुश हैं।

पत्नी अपने माहवारी के कपड़े जो कि उसकी पुरानी फटी साड़ी के टुकडे थे सबकी नजरों से छुपाते हुए सुखा रही थी। उसने बाद में पत्नी को समझाया कि फटे पुराने गंदे कपड़े उपयोग में लाने और धूप में नहीं सुखाने से कई तरह की बीमारियां होती हैं। इन्फेक्सन अर्थात सक्रंमण भी हो सकता है जो कि आगे चल कर खतरनाक बीमारी में बदल सकता है। इसलिए साफ कपड़ा या पैड लेना चाहिए। इसके लिए कैसा शरमाना?

एक बार भरत ने देखा कि पत्नी अपने माहवारी के कपड़े जो कि उसकी पुरानी फटी साड़ी के टुकडे थे सबकी नजरों से छुपाते हुए सुखा रही थी। उसने बाद में पत्नी को समझाया कि फटे पुराने गंदे कपड़े उपयोग में लाने और धूप में नहीं सुखाने से कई तरह की बीमारियां होती हैं। इन्फेक्सन अर्थात सक्रंमण भी हो सकता है जो कि आगे चल कर खतरनाक बीमारी में बदल सकता है। इसलिए साफ कपड़ा या पैड लेना चाहिए। इसके लिए कैसा शरमाना? उसकी पत्नी चकित थी। भरत अब कभी–कभी पत्नी के लिए सेनिटरी नेपकीन अर्थात पैड ला देते हैं। पत्नी भी जरूरत पड़ने पर अपने पति से मंगवाने में नही झिझकती है।

पति–पत्नी–बच्चे इस बदलाव से खुश हैं। वे अपने घर–परिवार रिश्तेदार एवं गांव वालों से इस बदलाव की चर्चा करते हैं। भरत अब समूह में हुए चर्चा की गांव के अन्य लोगों से भी साझा करते और उन्हे समूह में आने के लिए प्रोत्साहित करते है।

अब न मारूंगा, न मारने दूंगा

मंगलेश्वर उरांव राज मिस्त्री है उसकी उम्र लगभग 37 वर्ष है। वह इंटर तक पढ़ा है। उसकी पत्नी छोटी देवी है और एक 3 वर्ष की बेटी है। वह अपने परिवार के साथ सैंदा गांव सिसई ब्लाक गुमला जिला में रहता है।

एक समय था कि मंगलेश्वर आए–दिन अपनी पत्नी से झगड़ा करता था। वह शक्की मिजाज का था। राज मिस्त्री के काम से वह गांव के बाहर जाता था पर पत्नी को घर से बाहर भी नहीं निकलने देता। देर से आने को लेकर दोंनों में झगड़ा होता और वह मारता–पीटता।

छः महीने से ज्यादा हो रहा है मंगलेश्वर बहुत बदल गया है। ऐसा उसके पिता समूह से जुड़ने के बाद हुआ है, वह कहता है। 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम उसके गांव में चलता है। जिसके पिता समूह का वह सदस्य है। वह बैठकों में बराबर आता है।

उसकी पत्नी दूसरी बार मां बनने वाली है। यह जानने के बाद मंगलेश्वर पत्नी का बहुत ध्यान रखता है। पिता समूह की बैठक में गर्भावस्था के समय पत्नी की देखभाल में पुरूषों की भूमिका पर चर्चा हो रही थी। वह बहुत ध्यान से सुन रहा था, यह उसके जरूरत की बात थी। घर जाकर उसने अपनी पत्नी को बतलाया। और अब उसके खाने–पीने, टीकाकरण का ध्यान रखने लगा। पत्नी को लेकर आंगनबाडी में टीकाकरण के लिए जाता, उसे भारी काम–सामान उठाने नहीं देता। उसके खाने के लिए फल वगैरह ले आता। अपनी कमाई के पैसे जमा करता। वह सोच रहा था कि उसे डिलीवरी के लिए अस्पताल लेकर जाएगा। इसलिए उसने गांव की सहिया का नंबर लेकर रखा था और नर्स का भी ताकि जब भी जरूरत पड़े तो वह फोन कर सके।

उसकी पत्नी उसमें आए बदलाव से खुश थी और निश्चिंत भी। अब उसे अपनी बेटी

की भी चिंता कम थी क्योंकि मंगलेश्वर अब उसे भी नहलाना, खिलाना, सुलाना करता है। बेटी को भी वह टीका लगवाने ले गया था। घर के काम करने में भी वह पत्नी की मदद करता। अपने बेटी और पत्नी के कपड़े भी धोता। वह कोशिश करता है कि पत्नी को तकलीफ न हो।

डिलीवरी के दिन वह सहिया के माध्यम से पत्नी को अस्पताल ले गया। डिलीवरी होने के बाद पत्नी के खान–पान, साफ–सफाई और आराम का पूरा ख्याल रखा। अब वह टीकाकरण के दिन काम से छुट्टी ले लेता। बच्चे को लेकर आंगनबाडी में टीका लगवाता है।

उसकी पत्नी उसमें आए बदलाव से खुश थी और निश्चित भी। अब उसे अपनी बेटी की भी चिंता कम थी क्योंकि मंगलेश्वर अब उसे भी नहलाना, खिलाना, सुलाना करता है। बेटी को भी वह टीका लगवाने ले गया था। घर के काम करने में भी वह पत्नी की मदद करता। अपने बेटी और पत्नी के कपड़े भी धोता। वह कोशिश करता है कि पत्नी को तकलीफ न हो।

गांव की महिलाएं और रिश्ते की भाभियां उसे ताना देती और मजाक उड़ाती हैं कि – ''पहले तो मारता–पीटता था घर से निकलने नहीं देता था और अब सिर पर बैठा लिया है। ऐसा क्या हुआ।''

मंगलेश्वर कहता है – ''अब न मारूंगा न मारने दूंगा।'' आप भी अपने पतियों को 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' की बैठक में भेजो, वे भी बदल जाएंगे मेरी तरह।

रिश्तों में परिवर्तन

रामबिहारी सिंह की उम्र 34 वर्ष है वह अपनी पत्नी रोहिनी देवी एवं 4 साल के बेटे प्रियांशु कुमार सिंह के साथ बुड़का गांव जिला गुमला में रहता है। वह एक आंख से दिव्यांग है।

पिछले तीन सालों से रामबिहारी 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के पिता समूह से जुडा हुआ है। धीरज कुमार जो फैसिलिटेटर हैं बताते हैं कि समूह से जुड़ने के बाद रामबिहारी में बहुत बदलाव आया है।

गांव में समूह सत्रों में भाग लेते हुए उसने अपने अंदर बहुत बदलाव किया है। गांव वाले कहते हैं कि पहले अपनी पत्नी को कहीं भी अकेले नहीं जाने देता था इतना ही नहीं वह अपने छोटे भाई की पत्नी को भी कहीं बाहर जाने पर मना करता था।

पर अब रामबिहारी की पत्नी बाजार व मायके भी अकेली आती जाती है और इजाजत लेने की जरूरत नही है। पत्नी के बाहर जाने पर वह अपने बेटे की देख–रेख भी अच्छे से करता है। वह अब न तो किसी तरह की हिंसा करता है और न ही उसे किसी तरह से बढ़ावा देता है। उसने महिला समूह से जुड़ने के लिए अपनी पत्नी को प्रेरित किया। आज उसकी पत्नी महिला समूह की बैठक में अकेले जाती है और औरों को भी प्रेरित करती है। उसको अच्छा लगता है कि उसकी पत्नी का साहस और आत्मविश्वास बढ़ा है। वह बाजार और महिला समूह के काम से बैंक भी जाती है। यह सब देख उन्हे खुशी महसूस होती है।

इतना ही नही जेंडर समानता, मर्दानगी और स्त्री स्वास्थ्य के सत्रों से उन्होने अपनी पत्नी से माहवारी और कंडोम को लेकर बात करने की झिझक भी खत्म की। आज वह पत्नी के लिए पैड लाते हैं। साथ ही अनचाहे गर्भ को रोकने के लिए कंडोम का इस्तेमाल करते हैं। वह अगर इस कार्यक्रम से न जुड़ा होता तो शायद पहले जैसा ही सोचता।

सामूहिक पहल

महिमा टोप्पो 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में जैरा गांव का एनिमेटर है और धीरज फैसिलिटेटर हैं। दोंनो लोग समूह सत्रो के साथ–साथ अलग–अलग गतिविधियों व गांव के अन्य मुद्दो पर भी समूह में चर्चा करते हैं।

सलीम कुजूर और पुष्पा कुजूर पति–पत्नी हैं। इनके दो बेटी और एक बेटा है। सबसे बड़ी बेटी का नाम प्रियंका है। सलीम अपने परिवार के साथ जैरा गांव, जिला गुमला में रहता है। सलीम के पास कुछ खेती है जिसमें वह खेती करता है। थोडी खेती और थोडी मजदूरी से उसका परिवार का खर्च चलता है। इस कारण प्रियंका घर के कामों में व्यस्त रहती और कई बार स्कूल नही जा पाती।

महिमा ने जब सुना कि वह स्कूल नहीं जाती है तो वह उसके पिता से मिला और पूछा
– ''प्रियंका को स्कूल काहे नहीं भेजते हैं?''
सलीम – ''हम तो भेजते हैं, वही नहीं जाती।''
महिमा – ''काहे नहीं जाना चाहती है?''
सलीम – ''उसी से पूछिए, काहे नहीं जाना चाहती है।''

महिमा दूसरे दिन फिर सलीम के घर गया। आज प्रियंका घर में थी। प्रियंका से स्कूल नहीं जाने के बारे में महिमा ने पूछा – ''ऐ प्रियंका इधर आओ। तुम स्कूल जाती हो?''
प्रियंका – ''नही।''
महिमा – ''काहे? काहे नहीं जाती हो? पढ़ने का मन नहीं करता है।''
पिता सलीम – ''पढ़ने का मन ही नही करता है इसको। केतना कहते है जाओ रे, जाओ। पर नहीं।''
प्रियंका – ''सब लोग चिढ़ाते हैं, बुद्धु–बुद्धु। अक्ल नहीं है।''

महिमा – ''के चिढ़ाता है? सब लोग, के तुम्हारी दोस्त लोग, कि मास्टर लोग?''
प्रियंका – ''लड़की लोग। कभी–कभी मास्टर लोग भी।''
महिमा – ''अच्छा तुमको मन करता है पढ़ने का?''
प्रियंका थोड़ी देर चुप्पी के बाद – ''हां करता है।''
महिमा – ''ठीक है। हम बात कर देगे, एडमिशन दिला देंगे, जाएगी न?''
प्रियंका थोडी देर चुप रहने के बाद – ''हां जाएंगे।''

महिमा ने गांव में पिता समूह की बैठक में इस बात पर चर्चा किया। सभी सदस्यों की इस बात पर सहमति बनी कि लड़की को स्कूल भेजना चाहिए व स्कूल में बात करना चाहिए। अगले दिन एनिमेटर और फैसलिटेटर राज्यकृत मध्य विद्यालय जैरा, सकरौली गये और वहां के प्रधानाध्यापक तनवीर आलम से इस संबंध में बात किया।
महिमा – ''जी, इसी गांव की 12 साल की लड़की प्रियंका कुजूर इस स्कूल में पहले पढ़ती थी अभी स्कूल बीच में ही छोड़ दी है। उसी संबंध में बात करना है।''
प्रधानाध्यापक – ''हां–हां। विद्यालय छोड़ने वालों की सूची में उसका नाम है।''
धीरज – ''जी, हम लोग चाहते हैं कि उसका पुनः स्कूल में दाखिला हो जाए।''
महिमा – ''हम लोग उसके घर वालों एवं प्रियंका से बात किए हैं। घर वाले तो भेजते हैं लेकिन प्रियंका को शिकायत है कि सभी उसे चिढ़ाते हैं। तो इस शिकायत पर आप और बाकी शिक्षक ध्यान दें तो फिर से स्कूल नहीं छोडेगी।''
धीरज – ''हां, थोड़ा बच्चों के मन को भी समझने का प्रयास करें। ऐसी कोई बात स्कूल में न हो कि बच्चे अपमानित महसूस करें और स्कूल छोड़ दें।''
प्रधानाध्यापक – ''हां, आप ठीक कह रहे। पर इतने सारे बच्चो पर ध्यान रखना ..... मुश्किल होता है।''
महिमा और धीरज – ''हां, मुश्किल तो होता है पर स्पेशल केस में तो थोड़ा ध्यान रखा ही जाना चाहिए।''
प्रधानाध्यापक – ''हां, जरूर। आप लोगों ने हमारी मदद की है, ड्रापआउट बच्ची का पुनः दाखिला कर, मैं उसकी कक्षा की टीचर से बात करूंगा। आप कल लड़की का एडमिशन करा दें। हम ध्यान रखेंगे।''
महिमा – ''हां, हम भी फॉलोअप करेंगे।''

कुछ दिनों तक वह ठीक से स्कूल जाती रही। अचानक 12 जुलाई 2017 को खबर मिली कि प्रियंका गायब है तो सभी चितिंत हो गये। महिमा ने काजल उरांव जो उसकी सहेली है से पूछा – ''प्रियंका कहां गई है?''
काजल – ''बाजार जा रहे हैं, बोली थी।''
गांव वालो ने भी उसे बाजार में किसी महिला के साथ घूमते देखा था। पर महिला को वो लोग नहीं पहचानते। महिमा को डर हुआ कहीं वह मानव तस्करों के साथ तो नहीं चली गई?

दूसरे दिन सुबह, पता करते–करते महिमा, धीरज और गांव के दो लोग गुरूगांव पहुंचे। वहां जब पता किया तो प्रियंका एक घर में मिली। महिमा ने उस महिला को कहा – ''ये आपकी रिश्तेदार है?'' महिला ने कहा – ''नहीं, तो आप इसको अपने साथ घर क्यो लेकर आए?'' महिला ने बताया कि इ बाजार में इधर–उधर घूम रही थी तो हमको लगा खो गई है। बात किए तो मेरे साथ आ गई। हम भी सोचे कि अभी कहां जायेगी कल पता करेंगे।
धीरज – ''तो आप गलती किए न, इसको थाना में दे देते।''
महिला कुछ नही बोली।

सभी लोगों ने उसे कहा कि आगे से ऐसा न करें और गांव लौट आए। गांव लौटकर सबने उसके घर में उसे फिर एक बार समझाया। महिमा ने उसे फिर से स्कूल जाने के लिए कहा और स्कूल नहीं छोड़ने की सलाह दी। अभी वह लगातार स्कूल जा रही है। महिमा और समूह सदस्य बीच–बीच में प्रियंका के घर पर जाकर उससे बात करते रहते हैं।

खुलती राहें

25 वर्षीय संदीप उरांव गुमला जिला के सकरौली गांव का रहने वाला है। जब से वह छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ से जुड़ा उसके रहन–सहन और व्यवहार में बहुत परिवर्तन आया। अभी वह रांची की एक दूसरी संस्था बाल सखा में काम करता है। उसका आत्मविश्वास बढ़ा है। उसके साथी–परिचित यह देखकर अचरज करते हैं।

एक दिन धीरज कुमार से उसकी मुलाकात हुई। उसने भी उससे जानना चाहा, धीरज कुमार छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ के साथ 'समझदार जीवन साथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में फैसिलिटेटर है। अप्रैल 2016 में संदीप ने भी इसी कार्यक्रम में एनीमेटर के रूप में ज्वाइन किया था।
धीरज – आजकल कहां हो? पता चला किसी दूसरी संस्था में काम कर रहे हो?
संदीप – हां, रांची की बाल सखा संस्था में।
धीरज – अच्छा! कैसे ज्वाइन किये? मेरे कहने का मतलब है कि इंटरव्यू दिये थे?
धीरज संदीप का काम और व्यवहार जानता था।

संदीप काफी सक्रिय और मिलनसार युवक है। ऐनिमेटर के काम को उसने प्रशिक्षण के दौरान अच्छी तरह से समझा। गांव में काम करते वक्त किशोर हों या पिता, सबसे वह हिलमिल गया था। इसलिए 'किशोर समूह' और 'पिता समूह' के गठन में उसे कोई दिक्कत नहीं हुई।

संदीप – ''हां, एक दिन के अखबार में देखा संस्था जिसमें अभी मैं काम कर रहा हूं एक वैकेंसी निकली है। उसमें आवेदन दिया और परीक्षा में पास हो गया।''
धीरज ने आश्चर्य से कहा – अच्छा परीक्षा पास कर गए? आखिर क्या सवाल थे उसमें?
संदीप – ''परीक्षा में वो सभी सवाल थे जो मैने 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के प्रशिक्षण में सीखे थे।''

धीरज – ''जैसे' कुछ बताओ?''
संदीप – 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में घरेलू हिंसा, बाल अधिकार, महिला हिंसा, डायन कुप्रथा, क्या है? क्यों होता है? किसलिए होता है? इन सबको बहुत अच्छे से समझाया गया था। क्योंकि मैं एनिमेटर था तो मुझे समझ कर सीखना, अमल करना और सीखाना भी था।

लैंगिक भेदभाव यानि महिलाओं/लड़कियां के साथ घर–परिवार, समाज में होने वाले भेदभाव कैसे होते हैं। कैसे लड़का–लड़की के काम, व्यवहार का बंटवारा किया जाता है। इन सब के साथ यह भी सीखाया–बताया गया था कि इन को दूर करने के लिए क्या करना है। बस। संदीप मुस्कराया।

संदीप ने इस जानकारी को व्यवहार में लाकर अपनी उन्नति का रास्ता खोला। आज वह बाल सखा संस्था के अपने कार्यक्षेत्र के गांवों में मींटिगों में भाग लेता है तथा अपने गांव में एनिमेटर को सहयोग करता है।

बदलाव की शुरूआत

(1)

अमित लमकाना गांव का रहने वाला है। यह बेड़ो प्रखंड में है। एक दोपहर जैसे ही बाहर से वह घर आया उसकी मां ने उसकी पत्नी से पानी देने को कहा। उसकी पत्नी घर के कुछ काम कर रही थी, उसे पानी लाने में देर हो गई।

अमित (गुस्से से) – ''इतनी देर में पानी दिया जाता है?''
पत्नी – ''बेटी को दूध पिला रहे थे।''
अमित – ''रख दो, नही पीना है।'' गुस्से से उठकर चल दिया।

ऐसे ही अमित हर छोटी–छोटी बात पर नाराज होता। उसे गुस्सा जल्दी और तेज आता। वह सोचता था उसकी पत्नी और घर की बाकी महिलाएं क्या करती हैं, कुछ भी तो नहीं। उसके पास नौकरी भी नही थी। वह इसलिए भी चिड़चिड़ा रहता था।

एक दिन वह घर आया तो बहुत खुश था। अपनी मां से उसने कहा– मां मुझे एक संस्था सृजन फाउंडेशन में एनिमेटर के रूप में काम करने का मौका मिला है। कल से तीन दिन के प्रशिक्षण के लिए जाना है। यह रांची में होगा।

मां और पत्नी खुश हुए। मां पूछना चाहती थी कि संस्था में क्या काम करना होगा पर डर से नहीं पूछ पायी। संस्था से जुड़ने के बाद से ही वह कुछ–कुछ बदल रहा था। घर के लोग भी महसूस कर रहे थे पर उसके डर से कुछ नहीं कहते। एक दिन घर में कोई नहीं था पत्नी भी मायके गयी थी। ऐसे में किसी काम से पत्नी के पिता आये थे। अमित ने उन्हे प्रणाम पाती किया, बैठाया। फिर बातचीत के बाद खुद ही पानी और चाय बनाकर पिलाया। इससे उसके ससुर बहुत प्रभावित और खुश हुए। उन्होने घर आकर जब बताया तो सब ताज्जुब करने लगे और तारीफ की।

अमित का परिवार बड़ा है। परिवार में मां, दो भाई, दो भाभी, उसकी पत्नी आरती और बच्चे। मतलब छोटे–बड़े मिलाकर 13 लोगों का परिवार। अमित के गुस्सैल स्वभाव से बड़े व बच्चे सभी सहमे रहते थे। घर के पुरूष घर के काम नहीं करते थे और किसी काम में महिलाओं का निर्णय जरूरी नहीं समझते थे। बड़े बच्चों के सामने या कभी भी गालियां देते, यह उनके व्यवहार में था। घर में माहौल बिल्कुल ऐसा था कि पुरूष ही मालिक है, उसकी इच्छा सर्वोपरि मानी जाती।

अमित बदल रहा था यह उसे स्वंय भी और उसके घर वालों को भी पता चल रहा था। हमेशा खिटपिट करने वाला अब शान्त रहता। बच्चों और घर के सदस्यों से भी अच्छे से बात करता। बच्चे भी अब भागते नहीं बल्कि बात करते। यह बदलाव सब को अच्छा लग रहा था पर सब ऐसा 'क्यो' इस बात को लेकर परेशान भी थे।

अमित प्रशिक्षण के बाद एक दोपहर घर लौटा तो घर की सभी महिलाएं अपने–अपने काम में व्यस्त थीं। अमित को भूख लगी थी उसने किसी को कुछ कहे बिना खुद से खाना निकाल कर खाया, अपने बर्तन भी धो लिये। जब मां ने देखा तो कहा– ''अरे बाबू काहे गुस्सा हो? बोल देते तो हम ही, खाना निकाल देते। बर्तन भी धो दिये।'' मां ने आरती को सुनाते हुए कहा– ''कहां का करते रहते हो सब, देखो इ अपने से निकाल–खा रहा है।'' उनकी आवाज में डर, आशंका और उलाहना था।

अमित – ''नहीं मां गुस्सा नहीं हैं, देखे सब काम कर रहे हैं तो हम निकालकर खा लिये।''

दोपहर को सब के खाने के बाद बर्तनों का अम्बार लगा था। वो तो होता ही 13 सदस्य हैं। थाली, कटोरी और डेकची–कड़ाही, ढेर तो लगेगा ही। पत्नी अकेली साफ करने में लगी थी। उसने सोचा पत्नी को बहुत काम हो जाता है घर का, बेटी का। वह तुरंत पत्नी के साथ मिलकर बर्तन धोने लगा। पत्नी अचकचा गयी वह मना करती रही– ''इ का कर रहे हैं। छोड़िए, हटिए कोई देखेगा तो का कहेगा।''

अमित– ''बर्तन ही तो धो रहे हैं और का कर रहे हैं?'' उसने देखा आरती को अच्छा लगा यह उसका चेहरा बता रहा था। जब बर्तन धुल गए तो आरती ने अमित को कहा– ''ए जी धन्यवाद।'' वह मुस्कराया। जब दूसरे दिन भी अमित ने बर्तन धोना शुरू किया तब आरती बेटी को संभाल रही थी, वह रो रही थी। बर्तन के धुलने की आवाज सुनकर आयी तो देखा अमित धो रहा है। आरती– ''यह आप का कर रहे हैं, रोज–रोज मत कीजिए। घर में सब ताना मारेंगे कि बर्तन साफ कराती है। अमित– ''तुम बेटी को संभालो वह रो रही है। जिसको जो बोलना है बोलने दो, सोचने दो। कहां लिखा है?, कौन बताया कि पति को बर्तन नहीं धोना चाहिए? कौन काम का बंटवारा किया?''

रात को जब सब काम खत्म करके आरती अपने कमरे में जल्दी आयी तो तीनों खुश थे। आज अमित ने खाना बनाने में मदद किया था। आते ही आरती ने पूछा– ''आप संस्था में क्या करते हैं?'' यह सवाल घर के अन्य लोगों के मन में भी था पर अब भी डर या हिचक के कारण नहीं पूछ पाये थे।
आरती अमित के स्वभाव और व्यवहार में आये बदलाव से खुश थी, प्रभावित भी। पति की मदद से अब उसे काम बोझ नहीं लगता था। काम जल्दी खत्म कर वह घर के सदस्यों अपनी बेटी और पति को समय दे पाती थी।

अमित ने उसे 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम के बारे में बताया और विभिन्न प्रशिक्षण के बारे में बतलाया जिनमें भाग लेने से उसके सोच में और व्यवहार में बदलाव आया है। एनिमेटर का काम है दूसरों को बतलाना समझाना, तो सिर्फ बोलने से नहीं होगा न उदाहरण भी तो देना पड़ेगा।

यह सुनकर आरती मुस्करायी। दोनों इस बदलाव से खुश थे।

(2)

आरती को याद आया कि दो दिन बाद बेटी को टी0आर0एच0 वेक्सीन दिलाने प्राथमिक स्वास्थ्य उपकेन्द्र ले जाना है।
आरती –''कल मां को बुला लीजिएगा।''
अमित – ''क्यों? अच्छा–अच्छा याद आया, कल शनिवार है। ठीक है, लेकिन हम ले जाएंगे टीका दिलाने।''

शनिवार को अमित अपनी बेटी को लेकर जब उपस्वास्थ्य केन्द्र पहुंचा तो पता चला आंगनबाड़ी में टीकाकरण चल रहा है। अमित ने देखा नानी, दादी, मां ही वहां पर लाइन पर लगी हैं। मतलब सिर्फ महिलाएं।

जब अमित की बारी आयी तो एनम जानकी देवी उसे देखकर बोली – ''इसकी मां कहां है? खाना नहीं बना है क्या घर में? कि झगड़ा हुआ है?''
अमित– ''नहीं ऐसा कुछ नहीं हुआ है। वह घर पर है। हम बेटी के पिता हैं तो हम आ गए। क्या नही आ सकते?''
जानकी देवी बोली – ''अरे, क्यों नहीं आ सकते? बेटी मां–बाप दोंनो की जिम्मेदारी है।'' डी0पी0टी0 और पोलियो का टीका लगवा कर अमित जब घर लौट रहा था उसे खुद को एक जिम्मेदार पिता होने का अहसास हुआ। उसने अपने अंदर में एक अजीब खुशी महसूस की।

एक बार अमित पत्नी के साथ ससुराल गया। सबने दामाद की खूब खातिरदारी की। खाना खाने के बाद सब अपने कार्यों में फिर व्यस्त हो गए। उसे अपनी पत्नी से कुछ बात करनी थी तो वह किचन में गया, देखा कि पत्नी और उसकी बहन बर्तन के ढेर देखकर परेशान है। वह तुरंत पत्नी से बोला-"चलो जल्दी मिलकर साफ कर लेते हैं।"

यह जानकर कि दामाद ने बर्तन धोए सास बहुत नाराज हुई और बोली जो भी हो दामाद को जूठे बर्तन नहीं धोने चाहिए। लोग क्या कहेंगे। आपकी और हमारी बदनामी होगी। लोग हंसेगे।

उसने महसूस किया कि मां को हर बार टीकाकरण के दिन परेशान होना पड़ता है। पत्नी को सुई से डर लगता है। उसने यह काम कर दोनों को परेशानी से बचाया और जिम्मेदार पति और पिता का कर्तव्य निभाया।

(3)

अमित को घर का बिखरा हुआ सामान बिल्कुल पंसद नहीं। वह हर चीज व्यवस्थित रखता पर आरती काम ज्यादा होने के कारण नहीं कर पाती थी। हड़बड़ी में बाथरूम में वह अक्सर नहाने के बाद कपड़े छोड़ देती, अमित इस पर बहुत गुस्सा होता था पर जब से वह 'मर्दानगी' विषय पर प्रशिक्षण लेकर लौटा है, कुछ अलग सा करने लगता है। बाथरूम में कपड़े देख वह अब गुस्सा होने के बजाए कपड़े धो देता है। अब वह बेटी को नहलाता, उसकी पोटी भी साफ करता।

अमित को देखकर अब अमित के भाई–भाभी भी घर के कामों में बच्चों की देखभाल में एक दूसरे का हाथ बंटाते हैं। आरती भी इस बदलाव से खुश है। अब उसे अमित से पूछना नही पड़ता कि बाजार जाऊं, क्या खरीदूं कि नहीं खरीदूं। हिसाब भी नहीं देना होता। अमित अब उसकी इच्छा का सम्मान और विश्वास करते हैं। अमित–आरती की एक बेटी है, दोनों ने तय किया है कि दूसरे बच्चे के लिए वह तीन साल बाद सोचेंगे। तब तक वे गर्भनिरोधक साधन व्यवहार में लायेगें।

प्रशिक्षण लेने के बाद से अमित स्वंय के साथ–साथ कई लोंगो की सोच और व्यवहार में परिवर्तन, खुशियां और आत्मीयता लाया। यह सब 'समझदार जीवन साथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम और उसके प्रशिक्षण का प्रभाव है।

रमय का सहयोग

रमय नगड़ी गांव का रहने वाला है। नगड़ी गांव बेड़ो प्रंखड, रांची जिले में पड़ता है। रमय का पूरा नाम रमय धान है। वह अपनी पत्नी प्रभावती कुजूर जिससे उसने प्रेम विवाह किया था के साथ रहता है। उसके दो बच्चे हैं। रमय सृजन फाउण्डेशन संस्था में एनिमेटर है। वह 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़ा हुआ है।

पहले रमय गांव के दूसरे लोगों के साथ शराब पीता था। कोई भी काम नहीं करता था। घर खर्च चलाने के लिए उसकी पत्नी मजदूरी करती थी। उसके पास कुछ खेत थे जहां धान की फसल होती है। घर चलाने के लिए कभी–कभी वह धान बेचती थी।

एक दिन की बात है रमय की बहन फोन पर किसी से बात कर रही थी। उसने अपनी भाभी को बात करने के लिए फोन दिया। इससे रमय नाराज हो गया और उसने पत्नी को बहुत मारा। रमय दूसरे गांव में मजदूरी करने पर भी नाराज होता और मार–पीट करता था। इससे प्रभावती बहुत दुःखी रहती थी। वह पढ़ी लिखी थी, आगे पढ़ना चाहती थी और नर्स बनना चाहती थी। किन्तु रमय के डर से और बच्चों को कौन संभालेगा सोचकर मन मसोस कर रह जाती थी।

बेस लाइन सर्वे के दौरान प्रभावती का इंटरव्यू लिया गया था जिसमें एक सवाल पूछा गया था कि– क्या पति शारीरिक संबंध बनाते समय उनकी मर्जी पूछते हैं? इसके कुछ दिनों बाद एक रात जब रमय ने पत्नी से पूछे बिना शारीरिक संबंध बनाना चाहा तो पत्नी ने कहा– ''आपके सर लोग तो आप लोगों को सिखाते हैं किसी के साथ जबरदस्ती नहीं करना चाहिए।'' रमय बोला– ''वो लोग जैसा बोलेगे जरूरी नही कि वैसा ही हो।''
लेकिन बाद में जनवरी 2017 में वह प्रशिक्षण लेने गया और लौटा तब उसने सोचा– ''कि वह जो जानकारी दूसरे लोगों को देता है उस पर खुद ही अमल नहीं करता।

यह ठीक नहीं है। पत्नी ठीक ही तो कहती है, उसे उस रात की बात याद आ गयी। उसी समय उसने सोचा कि अब मैं जो दूसरों को सिखाता या जानकारी देता हूं स्वंय भी करूंगा। अब वह अपनी पत्नी से जबरदस्ती नहीं करता तथा उसके निर्णय का सम्मान करता है।'' उसके इस व्यवहार से प्रभावती खुश है।

लगातार प्रशिक्षण ने रमय को और बहुत बदल दिया। अब वह प्रभावती की खाना बनाने, पानी लाने, बच्चों को नहलाने–धुलाने में सहयोग करने लगा। प्रभावती अब खुश रहती है और अपने अड़ोस–पड़ोस को भी बताती है कि कैसे रमय बदल रहा है।

रमय प्रभावती के साथ अपनी संस्था में मासिक रिपोर्ट जमा करने गया। वहां संस्था के लोगों ने प्रभावती से रमय में आये बदलाव को जानना चाहा। पर वह झिझक रही थी। यह देखकर फैसिलिटेटर अमित ने सुभाषी लकड़ा जो संस्था की सहयोगी है, को उससे बात करने को कहा और स्वंय रमय से रिपोर्ट के बारे में बात करने लगे।
सुभाषी ने प्रभावती से पूछा – ''और अब रमय ठीके रखता है न?''
प्रभावती – ''हां दीदी अब तो ठीके है।''
सुभाषी – ''का ठीक है बताओ तो।''
प्रभावती – ''पहले से बहुत बदल गए हैं। घर का काम में मदद करते हैं। बीते साल 2016 में हमको बेहोश होने तक मारे थे। बताते हुए उसकी आंख भर आयी, उसका दुःख आज भी उसे है पर अब दो साल से मार–पीट नहीं किये हैं। वह धीरे से सुकून से मुस्करायी। अब तो बिना पूछे संबंध भी नहीं बनाते। बच्चा लोग का देखभाल भी करते हैं।''
सुभाषी बोली – ''अच्छा मतलब घर में तुम खुश हो। उसने हां में अपना सिर हिलाया। ''और गांव–घर में?''
प्रभावती – ''गांव घर में भी, जो लोग इसका साथ में शराब पी कर गांव में घूमते रहते थे अब मजदूरी करने जाते हैं और इसको मानता भी है। पर कुछ लोग पिता समूह और किशोर समूह का मींटिग करता है तो बोलता है पैसा कमाता है।''

अप्रैल 2017 में प्रभावती ने स्नातक परीक्षा पास किया। उसके मन की इच्छा फिर सामने आ गयी। वह नर्सिंग करना चाहती थी। उसने नर्सिंग कोर्स की जानकारी लेना शुरू किया पर उसने अपने पति को नही बताया था।

हम नर्सिंग ट्रेनिंग लेना चाहते हैं। इसके लिए 6 महीना घर से बाहर रहना होगा। बच्चों को कौन संभालेगा। यह सोचकर प्रभावती चिंता में थी, पर एक दिन उसने रमय के सामने अपनी इच्छा रखी। रमय – ''तुम नर्सिंग करना चाहती हो तो करो, अच्छी बात है। इसके बारे में पता करते हैं। बच्चों को हम संभाल लेंगे।'' यह सुनकर प्रभावती बहुत खुश हुई।

प्रभावती– ''हां, पर शौचालय निर्माण का काम पूरा होने पर ही जा सकते हैं।'' प्रभावती

अभी जल सहिया है। शौचालय निर्माण का काम चल रहा है यह उसकी जिम्मेवारी थी।

आज प्रभावती 'प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना' के तहत नर्सिंग प्रशिक्षण ले रही है। रमय अपने बच्चों की देखभाल के साथ एनिमेटर का काम भी अच्छे से कर रहा है। वह अपने अंदर और परिवार में आए बदलाव से खुश है। पूरा परिवार वास्तव में एक सुखी परिवार बनने की ओर अग्रसर है।

मेहमानी नहीं होगा

चिल्दरी गांव के मुखिया बुधराम बाड़ा जल्दी–जल्दी ईटा गांव की ओर अपने सहयोगियों के साथ मोटरसाइकिल से जा रहे थे। रास्ते में उन्होने अपने साथी को कहा– ''ईटा गांव के पोढ़ा कच्छप के घर जाना है। बार–बार मना करने पर भी अपनी सबसे छोटी बेटी की शादी कर देना चाहता है।''
साथी – ''पता नही लोग, क्यों छोटी बच्ची लोग का शादी जल्दी करना चाहते हैं।''
मुखिया – ''इ तो अच्छा है कि घर में उसकी बड़ी बेटी लोग ही शादी नहीं करने बोल रही है। अरे और तो और लड़का भी शायद कम उम्र का है।''
साथी – ''कितना भाई बहन है मतलब परिवार में और कौन–कौन है?''
मुखिया – ''दोनों पति–पत्नी, 6 बच्चा जिसमें दोनों बहन बड़ी है। इ सबसे छोटी है। 7 वां क्लास में चिल्दरी मध्य विद्यालय में पढ़ती है।''

बात करते–करते मुखिया और उनके दो साथी पोढ़ा कच्छप के घर पहुंच गए। वहां भीड़ लगी थी। हल्ला–गुल्ला हो रहा था। मुखिया जी आ गए सुनकर पोढ़ा और उनकी बेटियां बाहर आयीं। उन्हें अंदर ले जाकर कुर्सी में सम्मान से बैठाया।

बैठने के बाद बाकी सभी लोग भी चटाई, पिंड़ा, पीढ़ा जिसको जहां जो जगह मिली बैठ गए। एक तरफ कुछ लोग थे, जिनको मुखिया नहीं पहचान पा रहे थे तो पोढ़ा से पूछा– ''इ लोग ही गोतिया लोग हैं क्या?'' पोढ़ा ने सिर हिलाते हुए हामी भरी। देर न करते हुए मुखिया जी ने पूछा– ''क्या हुआ? क्या मामला है?'' तो दोनों ही पक्ष फिर हल्ला करने लगे। मुखिया और उनके साथी ने सबको शान्त कराया, कहा– ''हल्ला करने से मामला सुलझ सकता है तो करो फिर हमको क्यों बुलाया?'' समझदार, मददगार मुखिया बहुत अच्छे, शांत और सक्रिय इंसान हैं। पंचायत में सभी उन्हे बहुत मानते है इसलिए उनके ऐसा कहते ही सब शांत हो गए।

मुखिया – ''हां तो पोढ़ा तुम्हारे घर में आए हैं सब लोग तो पहले तुम ही बताओं कि

क्या हुआ है?''
पोढ़ा – ''बात इ है मुखिया जी कि मेरी छोटी बेटी जिसका नाम छोटी कच्छप है की शादी हम लोगों ने डोला सुकदा गांव के लड़के से तय किया। लेकिन मेरी दोनों बेटी का कहना था कि बेटी का उम्र अभी कम है इसलिए शादी अभी मत कीजिए। हम लोग दोनों पक्ष मेहमानी का दिन 6 जून को रखे थे। तो गए। वहां मेरी बड़ी बेटी लोग देखी कि लड़का भी छोटा 18 साल का है तो इ लोग और पक्का हो गए कि शादी नहीं करना है। देखते साथ इ लोग बोल दिया कि मेहमानी नहीं होगा। मेहमानी में गांव के लोग जो साथ गए थे और रिश्तेदार वो सब भी एक तरफ हो गए और मना कर दिये। फिर बिना मेहमानी किए हम सब लोग वापस आ गए।

तो आज यानि 7 जून को लड़का पक्ष आया है और मेहमानी करने बोल रहा है। पर बेटी मना कर दी है। अब लड़का पक्ष बोल रहा है, जबरदस्ती कर रहा है, लड़की उठा कर ले जाएंगे कहता है। पंचायत बुलाने बोल रहा है। इसलिए हम लोग आप को बुला लिये।
मुखिया ने लड़का पक्ष की ओर देखा और पूछा – ''पोढ़ो जो बोल रहा है। ठीक बोल रहा है?''
अगुवा (लड़के पक्ष से) – ''हां ठीक ही बोल रहा है। हम लोग इसीलिए आए है कि मेहमानी हो जाए। नही तो लड़की ले जाएंगे।''

दोनो पक्ष को सुनकर मुखिया बोले – ''तुम दोनो को सुन लिए, अब हम लड़का–लड़की से बात करेगे।'' मुखिया ने दोनों को बुलाया। सबसे पहले उनका नाम पूछा और यह पूछा कि क्या दोनों शादी करना चाहते हैं?
लड़का – ''हां, शादी करेंगे।''
लड़की – ''नही, हम नहीं करेंगे।''
मुखिया – ''क्यो नहीं करोगी बेटी?''
लड़की – ''हम पढ़ेगे, आगे पढ़ना चाहते हैं।''
मुखिया लड़के से – ''तुम्हारा उम्र कितना है?''
लड़का – 18 साल।
मुखिया लड़की से – ''और तुम्हारा?''
लड़की – 13 साल
मुखिया लड़का से – ''तुमको मालूम है शादी का उम्र कितना होना चाहिए?''
लड़का चुप। मुखिया का चेहरा गंभीर हो गया। लड़की यानी छोटी को घर में भेज दिया और पोढ़ा, अगुवा और बाकी सभी लोगों से बोले – ''किसको पता है कि शादी के लिए लड़का–लड़की का उम्र कितना होना चाहिए?'' सब चुप।

लड़का का उम्र 21 साल लड़की का 18 साल। शादी खेल है? जो जब मन लगा कर दिए। सबको पतरी–भात, गोस–भात मिल जाएगा खाएंगे और अपना–अपना घर

चले जाएंगे। लेकिन जिसका शादी होगा जिंदगी भर रोते रहेगा। काहे? काहे कि पक्का उम्र से पहले बिना सोचे समझे इनका बच्चा हो जाएगा। एक–दू–तीन पता नहीं कितना। उसमें केतना जिंदा रहेगा कितना मर जाएगा। लड़की का शरीर नहीं बना रहेगा तो क्या होगा। बीमार खुद भी रहेगी बच्चा भी। खून का कमी, पोषण का कमी और औरत लोग का कई तरह का बीमारी हो जाएगा। और लड़का जिम्मेदारी–समझदारी का मतलब ही नहीं जानता है। तब क्या होगा, सोचे हो कभी? नहीं न? तो सोचो।

और इसके बाद भी जबरइ करोगे तो इ जान लो कि कम उम्र में शादी करना और कराना दोनो अपराध है। दोनों को जेल हो जायेगा। ये सब सुनने के बाद लड़के वाले भी डरे या समझ गये। पर वापस चले गए।

घर लौटने के बाद रात में सोते समय वो अपना बीता कल याद करने लगे। एक समय था कि उनकी सोच भी ऐसी ही थी जैसे आज पोढ़ा, लड़के के पक्ष का अगुवा के जैसी। समाज के कामों में तो वह शुरू से सक्रिय थे। किन्तु सोच वही पुरानी पितृसत्तात्मक वाली थी। उन्होने एक गहरी सांस ली। अच्छा हुआ जो सृजन फांउडेशन के समूह और 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में गया। कितनी सारी जानकारी मिली। जैसे स्त्री–पुरूष समानता से घर–परिवार में कैसा बदलाव आता है?, कानून की, काम करने की, समस्या को समझने का नया रास्ता मिला। इसीलिए तो आज पंचायत का काम भी काफी अच्छा कर पाते हैं।

बेटी पर गर्व है

हाटू गांव का अंकित और उसके पिता 'समझदार जीवन साथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़े है। पिता तसुआ उरांव 'पिता समूह' और बेटा अंकित 'किशोर समूह' के सदस्य हैं। इसलिए पिता–पुत्र बैठकों में कई–कई मुद्दे पर बातचीत सुनकर आते हैं और अपने में, घर में बदलाव की कोशिश करते हैं।

तसुआ उरांव के घर में उसकी पत्नी गिन्नी उरांव, पुत्री मंजू, अंजू और बेटा अंकित है। मंजू ने स्नातक तक की पढ़ाई की है। तसुआ उरांव अपने बच्चों से दोस्ताना व्यवहार करते हैं पर कई बार वह असहज हो जाते हैं। पिता की स्थिति को अंकित समझता है इसलिए वह उनको सहयोग करता है।

कुछ दिनों पहले समूह बैठक में फैसिलिटेटर द्वारा ''महिला आवागमन–मौके और चुनौतियां'' विषय पर सत्र का आयोजन किया गया था। इस दौरान समूह के बाकी सदस्यों के साथ–साथ तसुआ और उसका बेटा यानि पिता–पुत्र दोनों उपस्थित थे। तसुवा भी महिलाओं–बेटियों के बारे में सोचने लगा था। वह भी बेटियों को स्वतत्रंता देना चाहता था। चाहता था कि बेटियां पढ़े खूब पढ़े, उनकी जो मर्जी आए करें – प्रशिक्षण ले, बाहर निकले, जानकारी लें। वह सोचता बच्चे जो चाहेंगें वह उन्हे मदद करेगा। बेटे–बेटी में फर्क नहीं करेगा।

उसकी 20 वर्षीय बेटी मंजू भी चाहती थी कि स्नातक के बाद अब उसे कुछ काम करना चाहिए जिससे वो अपने पैरों में खड़ी हो सके, कुछ घर में मदद कर सके। ऐसे में किसी ने उसे बताया कि बगल के गांव सिजुवा में प्राइवेट स्कूल में शिक्षिका का पद खाली है। उसने डरते सहमते अपने पिता से अपनी इच्छा जारी किया।

पिता तसुआ की खुशी उनके चेहरे पर दिख रही थी। उसने सहर्ष कहा – ''हां, हां जरूर जाओ।'' अपने पैर पर सबको खड़ा होना चाहिए। अपने अच्छे बुरे की पहचान

और निर्णय लेने का हक है तुम्हें। मौका का लाभ जरूर लेना चाहिए।

मंजू ही नही घर के सभी लोग इस निर्णय से खुश हुए। आज मंजू में आत्मविश्वास बढ़ा है। उसका आर्थिक स्वावलंबन हुआ। वह अपने वेतन का कुछ भाग घर में देती है और कुछ अपने लिए रखती है।

तसुआ को अपनी बेटी पर गर्व होता है और इसके बारे में दूसरों को भी बताता है।

मान्यता को बदल डालो

रवि ने सुबह उठने के बाद 'डिसना' (विछावन) समेटा ही था कि बेटी के हाथ से आईना टूट कर गिरा और फूट गया। बेटी ने डर कर उसे देखा। सोचा अब तो डांट पड़ेगी, उसकी आंखे डबडबा गईं। रवि ने उसे देखा और कहा– ''संभाल कर पकड़ना चाहिए न। चोट लग जाती तो।''

रवि की पत्नी सरिता उरांव रसोई में काम कर रही थी। शीशा टूटने की आंवाज सुनकर आयी तो रवि को देखकर सोचा अब तो डांटेगे। पर ऐसा कुछ हुआ नहीं। उसने विछावन भी समेटा देखा तो उसे सुखद आश्चर्य हुआ।

रवि और उसकी पत्नी ने शादी के बाद तय किया था कि उनके दो ही बच्चे होंगे। एक बेटी पहले से है। जब इस बार पत्नी ने गर्भवती होने की बात अपने पति को बताया तो काफी खुश हुआ। दोनों जांच के लिए गए, पता चला जुडवां बच्चा है। दोनों घर आकर हंसे, हम लोगों ने दो बच्चे की प्लानिंग की थी। सो दो एक ही साथ आ रहे हैं।

बच्चों के आने से दोंनो व्यस्त हो गए थे। यह 2016 की बात है। अभी कुछ समय पहले रवि ने सृजन फाण्डेशन ज्वाइन किया था। रवि ने उसमें जब से काम करना शुरू किया तब से वह देख रही है उसमें कुछ–कुछ बदलाव आ रहे है।

अभी चार दिन का प्रशिक्षण लेकर रवि लौटा है। घर में तीन बच्चे और पति–पत्नी रहते हैं। गांव–घर में पुरूष बहुत मदद नहीं करते, रवि भी नहीं करता था। लेकिन आज का उसका व्यवहार उसे अच्छा लगा। उसने नाश्ता परोसते वक्त रवि से कहा– ''डिसना (विछावन) कौन उठाया?'' रवि – ''हम उठाए।'' क्यों? वह मुस्करायी, बोली– ''अच्छा! आज आप मइया को भी शीशा तोड़ने पर नहीं डांटे।''
रवि – ''छोटी है फिसल गया होगा, टूट गया। पर इससे हाथ–पैर कट सकता था।''
पत्नी – ''आप बदल गए हैं। हम को अच्छा लग रहा है। कैसे हो रहा है यह सब?''

रवि – ''हम जो संस्था में काम कर रहे हैं वहां प्रशिक्षण में बहुत सारी बातें सीखयी जाती है।'' अच्छा लगता है। बात तो सब करते हैं सुनते हैं लेकिन अपने में भी लागू करने से कितना अच्छा लगता है। देखो, तुम्हें भी अच्छा लग रहा है।
पत्नी – ''हां और मइया को भी। नहीं तो आपका आवाज सुन के रो देती।'' अच्छा, और क्या–क्या सीखाते हैं? इस बार क्या सीखे?
रवि – ''महिला–पुरूष में समानता। इ जो सब बोलते–सोचते हैं न कि इ काम आदमी का इ काम औरत का है, मतलब, घर का काम औरत करेगी, कपड़ा औरत धोएगी और आदमी मालिक है इ सब नहीं करेगा। ये गलत है। काम का बंटवारा कौन किया?
पत्नी – ''हां ठीक ही तो है। आप भी तो पहले हम से बैठ के ऐसा बात नहीं करते थे?''
रवि – ''मुस्कराया, अच्छा हम नहाने जा रहे हैं। फील्ड जाना है।'' कह कर उठा, अपना और बेटी के गंदे कपडे उठाकर चला गया। चापाकल के पास उसने सोचा पहले कपडे धो लूं। उसी समय उसका दोस्त महावीर भी वहां नहाने पहुंचा। उसने उसे बच्चों के कपड़े धोते देख कहा– ''क्या यार जोरू का गुलाम हो गए हो?''
रवि – ''क्या कपड़ा धोना महिलाओं का काम है? पुरूष नहीं धो सकता? हमको समय मिला हम धो लिये। कोई भी काम महिला–पुरूष के लिए बंटवारा नही किया गया है।''

बच्चों को संभालना, कपड़े बदलने में मदद करना, टीका दिलाना, सब में रवि मदद करता है। इसी समय 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में 'मर्दानगी' पर प्रशिक्षण हुआ। इसमें नसबंदी पर चर्चा हुई। अब तक महिलाएं ही ज्यादातर ऑपरेशन कराती हैं। यही ज्यादा प्रचलित है किन्तु बातचीत में महेन्द्र सर ने जब कहा कि उन्होने नसबंदी करायी है तो सब चौंक गए। उन्होने बतलाया कि पुरूषों की नसबंदी सबसे सरल है, इसमें छोटा ऑपरेशन है जिसके बाद आप आराम से सारे काम कर सकते हैं जबकि स्त्रियों के ऑपरेशन में ज्यादा दिक्कत है। रवि भी इसके बारे में सोच रहा था, पर उसे पूरी जानकारी नही थी। उसने महेन्द्र सर से पूरी जानकारी ली। रवि ने घर आकर अपनी पत्नी को इस बारे में बतलाया तो बोली – ''हम करायेगे नसबंदी।'' रवि ने पत्नी को वो सारी बातें भी बतलायी जो उसने महेन्द्र सर से सुना था। रवि ने अपने साथ अपने साथी अर्जुन को भी इसके लिए प्रोत्साहित किया। धीरे–धीरे रवि घर–बाहर सभी जगहों पर समूह में प्रशिक्षण से मिली जानकारी को अमल करने की कोशिश करता और दूसरों को भी प्रोत्साहित करता है।

पिता का बेतरा

''कुछ अकल है कि नहीं, क्या करने बोलेंगे तो क्या करती हो। कितना जरूरी कागज था। यहां टेबल में रखे थे, क्या जरूरी था हटाना। अब कहां खोजे?'' गुस्से में बुधलाल ने अपनी पत्नी पर पास रखा गिलास उठा कर फेंका। जो उसके सिर पर जा लगा। पत्नी चोट लगे सर को सहलाती बैठ रोने लगी। इधर गुस्से से झल्लाता बुधलाल दरवाजा भड़भड़ाते हुए घर से बाहर निकल गया।

हुटरी गांव का बुधलाल वैसे तो पोस्ट ग्रेजुएट अर्थात एम.ए. पास है। उसकी पत्नी कम पढ़ी लिखी है। उन दोनों का एक छोटा बच्चा भी है। बुधलाल को बात–बात पर गुस्सा आता है। पिछली बार करम पर्व के समय तो उसने गुस्से में अपने घर का टी.वी. तोड़ दिया था। जब उसे गुस्सा आता है तो अपने आप में नहीं रहता। इसके कारण कई बार उसे आर्थिक नुकसान भी होता है। अपना गुस्सा वह कभी सामान पर कभी पत्नी पर उतारता है।

पढ़ा–लिखा शिक्षित बुधलाल सृजन फाण्डेशन में एनिमेटर है वह 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़ा है। यह जुलाई का महीना था। इधर अपने कार्यक्रम संबधी कई प्रशिक्षणों में जाने के बाद बुधलाल काफी शांत हो गया।

एक दिन कार्यक्रम के फैसिलिटेटर अमित ने एनिमेटर बुधलाल को ऑफिस बुलाया। जब वह बेड़ो कार्यालय जाने के लिए निकला तो उसने अपने बेटे को पीठ में बेतरा (पीठ में बांध कर) लिया। जैसे ही वह ऑटो में बैठा, एक महिला ने उससे पूछा – ''क्या इसकी मां नहीं है? बच्चा का तबियत खराब है क्या?''
बुधलाल – ''नहीं। क्यों पूछ रहे हैं? इसलिए कि हम बेतरा किए हैं? इसकी मां घर में काम कर रही है। बच्चा का देखभाल करना तो दोंनो का काम है। बच्चा केवल पत्नी का तो नहीं है। वह बोलकर मुस्कराया।''

रास्ते में सभी लोग उसे देख रहे थे। उसे गर्व महसूस हो रहा था। आज पहली बार बुधलाल बच्चे को बेतरा कर गांव से बाहर निकला था। जब ऑफिस पहंचा तो अमित कुछ काम में व्यस्त थे। उससे पूछने पर बुधलाल ने उन्हे बताया कि 'देखभाल' प्रशिक्षण के बाद से वह बच्चे की देखभाल में पत्नी का हाथ बंटाता है। प्रशिक्षण से उसे समझ में आया कि बच्चे के साथ घर का काम करने में दिक्कत होती है। तब से वह बच्चे को साथ रखते हैं।

इससे पहले घर और बच्चे को संभालने में परेशानी होती थी। काम भी ठीक से नहीं होता था न बच्चे की देखभाल होती थी, इससे पत्नी भी चिड़चिड़ी हो जाती थी। अब सब ठीक है। हम दोनों मिलकर सारा काम करते हैं। अब मेरा गुस्सा भी बहुत कम हो गया है। पत्नी के साथ पहले जो भी हिंसा मैने की है उसका पछतावा मुझे अब भी होता है। पहले पत्नी को डांटते, मारते–पीटते थे लेकिन अब सब खत्म हो गया है। हम दोनों अच्छे से खुशी से रहते हैं। पत्नी भी खुश है।

रूक गई पुतुल की शादी

रांची जिले के बेड़ो प्रखंड में चिल्द्री गांव है। यहां अश्विनी सिंह रहते हैं। अश्विनी सिंह गांव के विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष है। वह काफी सुलझे हुए समझदार व्यक्ति है।

गांव में सृजन फाउंडेशन नामक संस्था काम करती है जिसके माध्यम से 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम चलता है। इस कार्यक्रम के 'पिता समूह' के सदस्य हैं अश्विनी सिंह। वह इस समूह से 2016 से जुड़े हुए हैं। वे संस्था द्वारा चलाये जाने वाले कार्यक्रमों, प्रशिक्षण, सत्रो में भी भाग लेते हैं।

जनवरी 2018 की बात है। स्कूल की शिक्षिकाओं एवं गांव के अन्य लोग से उन्हे सुनने में आया कि गांव की ही एक किशोरी जिसका नाम पुतुल कुमारी है उसकी शादी की बात चल रही है। यह बात अश्विनी सिंह ने अपने एनिमेटर कालिन्द्र सिंह को बताया। साथी ही पुतुल के घर जाकर उसके माता–पिता से बात करने को सोचा। पिता समूह के सदस्यों ने पुतुल की शादी के बारे में जानकारी इकट्ठा कर कम उम्र में होने वाली शादी को रोकने का निर्णय लिया। अश्विनी सिंह जल्दी ही एक दिन पुतुल के घर गए और उनके माता–पिता से बात किया।
अश्विनी सिंह – ''आप लोग अपनी बेटी की शादी कर रहे हैं?''
पिता सत्यनारायण लोहरा ने कहा – ''हां, बात–चीत हो गया है। दिन तय होना बाकी है।''
अश्विनी सिंह – ''कितना उम्र है बेटी का।''
पिता – ''इस बरिस 14 साल पूरा हो जायेगा।''
अश्विनी सिंह – ''बस 14 साल। इतना कम उमर में शादी से का नुकसान होगा पता है?''
माता–पिता – ''क्या नुकसान होगा? शादी से भी नुकसान होता है?''
अश्विनी सिंह – ''हां, कम उम्र में शादी करने से सबसे ज्यादा बेटी को, लड़की को

नुकसान होता है। पक्का बांस से न घर छारते है? कि कच्चा बांस से।
माता–पिता – ''पक्का से न छारेंगे। कच्चा तो तुरथे घुना जाएगा।''
अश्विनी सिंह – 'हां ऐसा ही बेटी के साथ भी है। छोटा उमर में उसको घर का जिम्मेदारी दे देगें तो कब खेलेगी–खाएगी? तुरंत बच्चा हो जाएगा तो बच्चा भी कमजोर होगा और लड़की भी कमजोर हो जाएगी। छोटा उमर में ही चूल्हा–चौका, घर दरवाजा करेगी तो उसका घूमने–फिरने–खाने का दिन ही खत्म हो जाएगा। अरे अभी तो 14 साल ही हुआ है। कम से कम 18 साल की होने दो तब करना शादी। तब ये बालिग भी हो जाएगी और मन शरीर दोनो से मजबूत और समझदार हो जाएगी।

इस बारे में विद्यालय जहां पुतुल पढ़ती थी की प्राचार्या द्वारा भी पुतुल को समझाया गया। तब यह सब जान–सुन कर माता–पिता ने कहा– ''हां अब नहीं देंगे।''

6–7 महीने बाद पिता समूह के सदस्य मो0 कलाम को पता चला कि 10 जुलाई को उसने अपनी बेटी की शादी तय कर दी है तो उसने एनिमेटर कालिन्द्र और अश्विनी सिंह को बताया।

आज जुलाई महीने का 2 तारीख है। सत्यनारायण लोहरा अश्विनी सिंह के घर गया। सत्यनाराण लोहरा अपनी बेटी की शादी के लिए पैसे कर्ज लेने उनके पास आया था। तब अश्विनी सिंह ने दुबारा उसे समझाया कि कम उम्र में लड़की का शादी केवल उसका नुकसान ही नहीं बल्कि एक अपराध भी है। परंतु अब वह बात मानने को तैयार रहीं था।

तब अश्विनी सिंह ने 5 जुलाई को एनिमेटर कालिन्द्र से बात किया कि – ''क्या किया जाए?'' उन्होने बताया कि पुतुल का पिता बात नहीं मान रहा है।

कालिन्द्र – ''इतना समझाने पर भी नहीं समझ रहा है तो हमें अब चाईल्ड लाइन से संपर्क करना चाहिए।''

10 जुलाई को शादी थी इसलिए अश्विनी सिंह ने देर करना ठीक नहीं समझा। उन्होने कालिन्द्र के मोबाइल फोन से चाईल्ड लाईन के 1098 नम्बर पर फोन कर सारी जानकारी दे दी।

फोन पर प्राप्त जानकारी के आधार पर चाईल्ड लाईन वालों ने आकर जांच किया और सब सही पाया। उन्होने 9 जुलाई को लड़की के पिता से एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करवाया जिसमें लिखा था कि लड़की की शादी 18 साल बाद किया जाएगा।

बच्चों की जिम्मेदारी थोड़ी हमारी थोड़ी तुम्हारी

अनवर हुसैन हाठू गांव के रहने वाले हैं। उनकी पहली पत्नी का बीमारी के कारण मृत्यु हो जाने के 10 वर्ष बाद दूसरी शादी 19 अप्रैल 2017 को किया है। पहली पत्नी से उनको एक बेटा है।

अनवर हुसैन सृजन फांउडेशन के साथ 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में एनिमेटर हैं। फैसलिटेटर अमित जब उनके घर गये तो उनकी भाभी और भतीजी से मुलाकात हुई। घर के सभी लोग उनके काम से खुश हैं। कार्यक्रम व प्रशिक्षण से संबधित बातें वह घर में सबके साथ साझा करते हैं। उनकी भतीजी कहती है – ''चाचा सामाजिक कार्यो से जुड़े हैं, अच्छा लगता है।''

अनवर को जब पता चला कि उनकी पत्नी गर्भवती है तो बहुत खुश हुए और पत्नी के साथ खान–पान, आराम, डॉक्टर से जांच करवाना, टीकाकरण आदि सबका ख्याल रखने लगे। वह घर के कामों में पहले भी भाभी का हाथ बंटाते थे अब भाभी और पत्नी दोनों का घरेलू कार्यो में हाथ बंटाते हैं।

एक दिन अनवर अपने खेतों की ओर काम देखने गए थे। उनकी पत्नी की डिलीवरी का दिन पास था। तभी उनकी भाभी का फोन आया कि पत्नी की तबीयत ठीक नहीं है, वे तुरन्त घर आये। देखा तो पत्नी की तबीयत खराब हो रही थी, तुरंत सहिया सहोदरा देवी को बुलाया। देखने के बाद सहोदरा देवी ने अनवर से, पत्नी को स्वास्थ्य केन्द्र ले चलने को कहा। घर से वे अपनी पत्नी को लेकर बेड़ो के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गए। डॉक्टर ने वहां जांच कर बताया कि उनकी पत्नी की डिलीवरी नार्मल नहीं है। ऑपरेशन करना होगा। वहां से वे फिर रांची के सदर अस्पताल में पहुंचे जहां आपरेशन द्वारा बच्चे का जन्म हुआ। तब कहीं जाकर अनवर एवं पूरे परिवार ने चैन की सांस ली।

तभी अनवर को प्रशिक्षण की बात ध्यान में आयी कि बच्चे को मां का पहला दूध और

टीका देना है। वह जल्दी से सिस्टर के पास गए और पूछा– ''सिस्टर बच्चे को मां का पहला दूध पिलाना है और टीका दिलाना है।''
सिस्टर – ''बच्चा, मां का पहला दूध भी पी लिया है और टीका भी उसे दे दिया गया है।''

अस्पताल से डिस्चार्ज होकर घर लौटने के बाद अनवर ने एक निजी डॉक्टर से पत्नी की जाँच करायी। जाँच में डॉक्टर ने सब ठीक पाया। अनवर अपने बच्चे और पत्नी का अच्छे से देखरेख करते हैं। रात में बच्चे के रोने पर स्वंय उठते और उसके कपड़े बदलते हैं, खेलते हैं, रोने पर चुप कराते हैं। अनवर छोटे बेटे और पत्नी की देखरेख के साथ बड़े बेटे को भी पढ़ाने बैठते हैं।

अब अनवर प्रशिक्षण की बातों को याद कर पिता समूह के अन्य सदस्यों को जिनके छोटे बच्चे हैं उन्हे टीकाकरण के लिए भी प्रेरित करते हैं। जिस दिन गांव में टीकाकरण होता है वह सुबह–सुबह सबको याद दिलाते हैं कि टीकाकरण के लिए जाना है। अनवर के प्रयास से अर्जुन मुंडा, कुर्बान अली, मन्नू बोहरा एवं अनवर अली सभी अपनी–अपनी पत्नियों के साथ टीकाकरण के लिए आंगनबाड़ी केन्द्र जाते है।

पुरूषों के आने के संबंध में एनम कहती है कि कई बार पुरूष आते हैं पर बिना मतलब के सवाल कर परेशानी खड़ी करते हैं जैसे समय पर क्यों नहीं आते? इतनी देर कहां थे? टीकाकरण के बारे में जानकारी नहीं लेते इसलिए वे पुरूषों की भागीदारी पर उत्साह नहीं प्रकट करते, लेकिन आप लोगों ने अच्छा उदाहरण दिया। इस पहल को देखकर एनम, आंगनबाड़ी सेविका और सहिया दीदी ने कहा – यदि ऐसा ही हर पिता और पति की भूमिका टीकाकरण में होगी तो एक भी बच्चा टीकाकरण से नहीं छूटेगा।

टीका दिलाने के बाद पिता समूह के सदस्यों को अब बहुत खुशी का अनुभव हो रहा था। उन्होने न केवल अपनी जिम्मेदारी निभाई बल्कि एक प्रयास किया ताकि दूसरे पिता भी यह जिम्मेदारी लें और खुशी का अनुभव करें।

इस तरह काम कीजिएगा कि नही?

(1)

27 वर्षीय कालिन्द्र अपने माता–पिता का इकलौता बेटा है। उसकी शादी हो चुकी है और एक बच्चा है। कालिन्द्र बेड़ो प्रखंड, रांची के चिल्दिरी गांव में रहते है। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नही है। कालिन्द्र पेशे से प्राइवेट टीचर हैं।

'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में वह एनिमेटर है। इस कार्यक्रम के तहत मई 2016 में पहला प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था जिसके तहत सभी एनिमेटर्स को अपने अंदर बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया गया।

यहां से कालिन्द्र के अन्दर बदलाव आना शुरू हुआ। पहले वह घर का काम करने से पहले सोचते थे कि लोग क्या कहेगे। पर अब वह घर के छोटे–छोटे काम झाड़ू लगाना, पानी लाना करते हैं। लेकिन प्रशिक्षण से लौटने के बाद जब ये सब काम करना शुरू किया तो गांव, घर के लोगों ने ताना मारना शुरू कर दिया। घर वाले भी मना करने लगे। कहते – ''ये सब काम महिला का है। पुरूषों को शोभा नहीं देता।''

एक दिन पत्नी किसी काम से बाहर गई हुई थी। बेटा के साथ कालिन्द्र खेल रहा था। तभी उसने पैखाना कर दिया। अब? कालिन्द्र ने सोचा अब क्या करें? कैसे साफ करें, पहले कभी किया नही था। सोचा पत्नी आएगी तब साफ करेगी, फिर लगा वह कब आएगी, कब साफ करेगी। तब तक बच्चा ऐसे कैसे रहेगा? तभी अपने प्रशिक्षण की याद आयी और उसने अपने हाथों से बच्चे का पेखाना साफ किया। थोड़ी देर में पत्नी आयी और उसने बेटे की पेंट किनारे रखी देखी तो पूछा– ''कौन धो दिया बाबू को। कालिन्द्र ने कहा– ''हम।'' उसने फटाक से कहा –''तो कपड़ा भी साफ कर देते, इसको क्यों छोड़ दिये।'' कालिन्द्र मजाक से बोला– ''बराबरी का काम है। आधा हम, आधा तुम।'' यह सुनते ही वह हंस पड़ी और हंसते–हंसते साफ किया।

वह घर के साथ बाहर भी अब घरेलू काम करने लगा था। चापाकल के पास कपड़ा धोते देख एक महिला ने ताना दिया – ''शादी हो गई, बच्चा हो गया अभी भी कपड़ा धो रहे है, शरम नहीं आता है, बीवी को कितना सुख पहुंचाएगे।'' कालिन्द्र ने जवाब दिया –''समय मिलता है तो अपना काम कर लेते हैं। इसमें शरम क्यों? थोड़ा उसको भी आराम हो जाता है, काम भी जल्दी हो जाता है। आपको अपने पति का एक काम कम करना पडे तो आप खुश होगे न? तो बस एक–दूसरे को मदद करने से खुशी मिलती है।'' वह बोली– ''आप ठीक कहते हैं, मेरे पति तो ताश खेलने बैठ जाएंगे पर काम नही करेंगे।'' उसकी आवाज में अफसोस था। कालिन्द्र ने कहा – ''मेरे घर भेजिए आपके पति को समझाएंगे।''

यह सब देखकर पत्नी प्यार से कालिन्द्र का नाक खींचती और कहती संस्था में काम करना छोड़ देने के बाद भी इस तरह काम कीजिएगा कि नही?'' कालिन्द्र – ''हमारा घर–परिवार खुश रहेगा तो क्यों नहीं करेगें।''

(2)

कालिन्द्र का पत्नी के साथ घरेलू कामों में बढ़ती भागीदारी को देखकर उनकी मां चिड़चिड़ी हो गई। वे पड़ोस में, रिश्तेदारों और अन्य लोगों को शिकायत करने लगी कि बेटा सारी कमाई पत्नी को देता है। मुझे कुछ नहीं देता। लोग जब यह बात कालिन्द्र को बताते तो उसे बहुत तकलीफ होती। किन्तु कालिन्द्र ने काम करना, हाथ बंटाना नहीं छोड़ा।

25 जुलाई की बात है उस दिन मां से कालिन्द्र का झगड़ा हुआ, इन्ही सब बातो को लेकर। माता–पिता ने उन्हें अलग कर दिया। अर्थात उनकी पत्नी बच्चे सहित अलग घर दे दिया। चूल्हा अलग कर दिया। इससे कालिन्द्र बहुत परेशान हो गया। उस समय उसके पास कुछ भी नही था। न चावल–दाल, न पैसे न बर्तन। उसने अपने दोस्त रामजन्म दास से कुछ बर्तन लिया और खाना बनाया। तीन–चार दिन बाद पत्नी प्रभा अपने मायके चली गई।

प्रभा जब एक सप्ताह बाद ससुराल से आयी तो उसने गुस्से से अपनी सास के पैर नही छुए। यह कालिन्द्र को अच्छा नहीं लगा। उसने पत्नी से पूछा तो प्रभा ने कहा– ''आपकी मां हमको देखकर दूसरी तरफ चली गई तो कैसे छूते।'' कालिन्द्र को इससे बहुत तकलीफ हुई।

तीन महीने बाद मां को कुछ पैसों की जरूरत है, यह पता चला तो उसने 600 रू0 देना चाहा। पर मां ने यह कहते हुए मना कर दिया कि – ''जाओ अपनी पत्नी को

दो।'' कालिन्द्र ने तीन–चार बार जब लेने के लिए कहा तो उन्होने पैसे ले लिया। फिर कुछ दिन बाद मां के लिए दवा ला कर दिया।

धीरे–धीरे स्थिति सामान्य होने लगा। थोड़ी–थोड़ी बात चीत होने लगी। मां का व्यवहार बदल रहा था। ये सब बात पत्नी को अच्छा नहीं लगता, वो कहती – ''आप मां से मेरी शिकायत करते है।'' कालिन्द्र उसे समझाता ''ऐसा नही है, खेती–बारी, खाद–बीज के बारे में बात करते हैं।'' अब मां, कालिन्द्र और प्रभा से ठीक से बात करती थी पर मन में अभी भी खटास था।

मां कहती – ''तुम्हारी पत्नी अभी जब अलग खाना बना कर खा रहे हैं तो बहुत सेवा करती है। लेकिन जब साथा खाना बनता था तो उसका व्यवहार अच्छा नही होता था।'' पर मां अब अपने पोते को घुमाने भी ले जाती।

घर से अलग होने के 7 माह बाद कालिन्द्र ने बताया कि आजकल मां उससे खूब बात करती है। पहले से ज्यादा। एक दिन मां ने कालिन्द्र के यहां खाना खायी। कालिन्द्र को लगता है अब मां को कुछ तो महसूस होता होगा कि वह गलत नहीं है।

इसी बीच एक दिन की बात है कालिन्द्र किसी काम से बाहर जा रहा था तो बच्चा उसे जाते देख रोने लगा। तभी पत्नी ने कहा कि - ''थोड़ी देर बाबू को पकड़िए हम कपडा धो कर तुरन्त आते हैं।'' कालिन्द्र ने कहा - ''तुम्हीं पकड़ो, हमको देर हो जायेगा।'' पत्नी नाराज हो गई और कहा - ''थोड़ा सा काम करते हैं तो देरी हो जाता है'' यह कह कर गुस्से में बच्चे को लेकर कपड़ा धोने जाने लगी। कालिन्द्र - ''उसे सुला दो, फिर काम कर लेना।'' पर वह नही सुनी चली गई। कालिन्द्र को बहुत जोर गुस्सा आया, जी चाहा कि सामने पड़ा सब तोड़-फोड़ दे। तभी उसे प्रशिक्षण की बातें याद आई और अपने गुस्से को काबू किया।

लगभग एक महीना और बीता होगा कि कालिन्द्र की मां जो कहीं से थक कर लौटी थी, कालिन्द्र और प्रभा को अपने और कलिन्द्र के पिता के लिए भी साथ में खाना बना लेने के लिए कहा। तब से अब सबका खाना एक साथ बन रहा है।

कालिन्द्र के लिए यह 10 महीने बहुत ही कष्टकारी रहा। सिर्फ कालिन्द्र के लिए नहीं सबके लिए भावनात्मक और व्यवहारिक रूप से कष्ट कारक रहा। कभी–कभी लोगों से जब सुनने को मिलता है कि मां कहती है हमारा एक ही तो बेटा है तो बहुत खुशी होती है।

सिलसिला आगे बढ़ता ही रहेगा ...

मुझे आज भी याद है जब मैं पहली बार गांव गया था, किसी से बात तक नहीं कर पा रहा था। उस समय मेरे अंदर इतना आत्मविश्वास नही था कि किसी से दो शब्द बात कर सकूं। मेरी आवाज भी लड़खड़ाने लगी थी। 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार साथी' कार्यक्रम में जुड़ने से एक नई चुनौती का एहसास हो रहा था।

शुरूआत में मुझे व मेरे दूसरे साथियों को लगा कि – ''शायद हम पैसे के लिए जुड़े हैं'' क्योंकि हम सभी उसी समाज से बड़े हो कर आये हैं जहां पर परिवार चलाने के लिए पैसे कमाने की जिम्मेदारी सिर्फ पुरूषों के ऊपर मानी जाती है। लेकिन जैसे–जैसे हम आगें बढ़ते गए हमारी सोच बदलती गई और पैसा महत्वपूर्ण नहीं रह गया।

अमित कुमार सिंह इस कार्यक्रम में शुरूआत से ही जुड़े हैं। वह फैसिलिटेटर हैं। अमित का कहना है कि – ''हम अपने खुद के द्वन्द से गुजरते हुए सामाजिक चुनौतियों को स्वीकार कर आगे बढ़ रहे थे, समुदाय में हम सब एक साथ नजर आने लगे थे, लोग हमारे प्रयासों के बारे में नुक्कडों में चर्चा करने लगे थे और धीरे–धीरे एक बड़ा समूह महिलाओं–लड़कियों व बच्चों के साथ हो रहे भेदभाव एवं हिंसा के खिलाफ हमारा साथ देने के लिए तैयार हो रहा था।''

लेकिन वर्ष 2017 में, कार्यक्षेत्र में किशोरियों के साथ यौन हिंसा की घटनाओं ने हमें झकझोर कर रख दिया। लोग किशोरियों के साथ हुई घटनाओं के लिए किशोरियों को ही जिम्मेदार मानते थे और पुरूषों को बचाना चाहते थे। दूसरी तरफ जब सामाजिक न्याय व महिला समानता के लिए खुद से बदलाव की शुरूआत हुई तो साथी कालिन्द्र सिंह को अपने ही परिवार से अलग कर दिया गया। तब अमित को समझ में आया – ''पितृसत्ता की जड़े कितनी गहरी हैं और पूरी व्यवस्था में किस तरह काम करती हैं।''

इन परिस्थितियों के बीच अमित के साथ इस परियोजना से जुड़े सभी साथी पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं को चुनौती देते रहे। आज कालिन्द्र पुनः अपने परिवार के साथ जुड़ गया है। पिता के सहयोग से हिंसा से प्रभावित बेटी और मजबूती के साथ अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखे है व दोषियों को कानूनी दंड मिल पाया है। इन घटनाओं की सफलताओं ने अमित को और अधिक उर्जा तथा आत्मविश्वास के साथ अपने प्रयासो को आगे बढ़ाने का साहस दिया तथा भावनात्मक रूप से इस कार्यक्रम के साथ जुड़े रहे।

अमित का कहना है कि – ''मेरे परिवार के लोग मेरे काम में व्यस्त होने के कारण खुश थे पर किये जा रहे काम को शायद समझ नहीं पा रहे थे। प्रशिक्षणों के बाद जब मैं घर जाता तो अपनी मां से चर्चा करता। मैं पहले घर के कामों को नहीं करता था लेकिन शुरूआत खुद के बर्तन धोने से किया और घर के दूसरे सदस्यों को भी प्रेरित करने का प्रयास किया। मैं इसमें बहुत सफल नही हो पाया। घर के सदस्यों के साथ समय बिताना और चर्चा करना अब अच्छा लगता है और एक अलग सी संतुष्टि देता। हमारे काम के पोस्टर देखकर पापा भी कभी–कभी घर के कामों में सहयोग करना शुरू किए हैं, फिर भी लगता है कि अभी और प्रयास करने की जरूरत है, जो अभी भी जारी हैं।''

अमित बताते हैं कि – ''समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता कार्यक्रम के तहत मिलने वाले प्रशिक्षणों ने मेरे निजी जीवन में बहुत असर डाला, जिसके कारण मैं व्यक्तिगत बातों को साझा कर पाया और मदद ले पाया। मेरे खुद के और दूसरे साथियों में इन बदलाओं की पहल करने में संस्था से राजीव सर, सी.एच.एस.जे. से महेन्द्र कुमार व जगदीश सर ने मेरा मार्गदर्शन व मां के हौसलो ने नई उर्जा दिया।''

महिलाओं व किशोरियों के साथ आज जो चुनौतियां हैं और हमारे साथियों ने जो बदलाव के सकारात्मक पहल की है, तुलनात्मक रूप से बहुत ही छोटे प्रयास हैं। लेकिन पितृतंत्र की इन व्यवस्थाओं को चुनौती देने का यह सिलसिला आगे बढ़ता ही रहेगा।

और एनम मान गई

जानकी देवी एनम है। उनकी पोस्टिंग लमकाना गांव के उपस्वास्थ्य केन्द्र में है। लमकाना गांव बेड़ो प्रखण्ड जिला रांची में पड़ता है। जानकी देवी का सेवा क्षेत्र ईटा पंचायत के लमकाना, हाटू, हुटरी और कादोजोरा गांव है।

13 मई 2017 को हुटरी गांव को टीकाकरण दिवस था। सृजन फाउंडेशन से फैसिलिटेटर अमित ने देखा कि चरवा उरांव अपनी 9 महीने के बच्चे प्रेम को टीकाकरण के लिए आया हुआ है। अमित एनम से टीकाकरण में पुरूषों की भागीदारी पर बात करने आया है। चरवा उरांव हुटरी में पिता समूह का सदस्य है इसलिए अमित–चरवा एक दूसरे से परिचित है।

फैसिलिटेटर अमित ने एनम जानकी देवी से टीकाकरण में बच्चों, माताओं के साथ पिताओं की भूमिका पर उनसे चर्चा की। अपने कार्यक्रम के बारे में बोलते हुए अमित ने कहा ऐसा होने से पिता को बच्चों के प्रति जिम्मेदार बना सकते हैं कि वह भी अपने बच्चों के प्रति सचेत हो, जागरूक हों।

एनम – ''आप बात तो ठीक कह रहे हैं लेकिन पुरूष आकर विना वजह की बात, सवाल–जवाब करते हैं।'' जैसे इतना देर से काहे आए? कहां थे अब तक? टीका के बारे में जानकारी कम लेते हैं। ऐसे फालतू बात और हल्ला–गुल्ला से काम करने में दिक्कत भी होता है। बच्चा सुई नाम से ऐसे ही डरा रहता है, हल्ला होने से और रोने लगता है। इसलिए हम चाहते हैं महिलाएं ही आएं।
फैसलिटेटर अमित – ''हां, दिक्कत तो जरूर होता होगा पर क्या यह जरूरी नहीं कि पिता अर्थात पुरूषों को भी बच्चों और महिलाओं के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी हो?''
एनम सहमत होते हुए बोली – ''हां, यह तो होना ही चाहिए।''
तीन महीने बाद यानि 15 जुलाई 17 को जब लमकाना गांव के एनिमेटर अमित अपनी बेटी को लेकर अपने गांव के उपस्वास्थ्य केन्द्र में गए तो एनम ने उसे देखकर कहा –

''इसकी मां कहां है? वो काहे नही आयी? झगड़ा–उगड़ा हुआ है का?''
एनिमेटर अमित ने कहा – ''वो घर पर है। क्यों हम नही आ सकते? मैं पिता हूं इसका, तो मेरा भी जिम्मेवारी है कि इसका देखभाल करूं। समय पर टीका लगवाऊं।'' एनम कुछ नही बोली, शायद उन्हे पिछली चर्चा याद आ गई है। उन्होने बच्ची को डी0पी0टी0 का टीका और पोलियो की दवा पिलाई। पर वो इस बात से अब भी पूरी तरह से सहमत नहीं थी कि पुरूष आएं।

22 फरवरी 2018 की बात है। सभी गांव के पिता समूह में टीकाकरण बच्चों की देखभाल, पत्नी के स्वास्थ्य की देखभाल पर लगातार चर्चा चल रही थी। इधर एनिमेटर अमित और दूसरों का अपना अनुभव भी था कि एनम लोग पुरूषों के वेवजह बहस के कारण टीकाकरण में पुरूषों की भागीदारी को बहुत महत्व नहीं देते हैं।

इस बार जब हाटू गांव में टीकाकरण दिवस हुआ तो वहां के एनिमेटर जो डेढ़ महीने पहले ही पिता बने थे, टीकाकरण को लेकर काफी उत्साहित थे। उसने अपने समूह के अन्य सदस्यों को भी टीकाकरण हेतु प्रेरित किया। अमित ने आंगनबाडी सेविका, एनम और सहिया दीदी से बात की और कहा कि इसी तरह से यदि पुरूषों का टीकाकरण में भागीदारी होगा तो कोई बच्चा छूटेगा नही। पिता भी जिम्मेदारी महसूस करेगें। पिता–बच्चे का संबंध भी अच्छा बनेगा। एनम, आंगनबाडी सेविका और सहिया ने माना कि इससे महिलाओं के काम बोझ भी कम होगा।

फैसलिटेटर अमित और लमकाना, हाटू व हुटरी गांव के एनीमेटर्स के प्रयासों से टीकाकरण में तेजी आई है, पुरूष अपनी पत्नी और बच्चों के साथ टीकाकरण के लिए जा रहे हैं तथा एनम को भी अपना काम आसान लगने लगा है क्योंकि पुरूषों का सहयोग बढ़ा है। एनम भी यह मानती है कि पुरूषों के सहयोग से वे अपनी सेवाएं बेहतर तरीके से दे पा रही है।

हाथ बढ़ा मुस्कान लौटाया

आज फिर इब्राहिम का मन दुःखी है। उसके सारे दोस्त स्कूल चले गये, वह नहीं जा सका। पिछले तीन महीनों से वह नहीं जा पा रहा है। उसका घर स्कूल से तीन किलोमीटर दूर है। नहीं–नहीं वह तीन किलोमीटर नहीं जा सकता, यह बात नहीं है। वह जाना चाहता है पर कैसे जाए?

इब्राहिम दिव्यांग है। उसके पिता सरफुद्दीन अंसारी काफी गरीब हैं। सरफुद्दीन अपने परिवार के साथ बोकारो के बनकनारी गांव में रहता है। यह गांव गर्री पंचायत में है। बनकनारी गांव में भी 'पिता' और 'किशोर समूह' है। एक दिन पिता समूह की बैठक में समूह सदस्य मो0 रिजाउल ने इब्राहिम के स्कूल नहीं जा पाने की बात एनिमेटर सोहराब अन्सारी को बताया।

सोहराब – ''ओह! तब तो मुखिया से बात करना पड़ेगा। इतनी सारी कल्याण योजनाएं हैं निशक्तों के लिए। फिर मुखिया तो हमारे 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जुड़े हैं और गर्री गांव में पिता समूह का सदस्य है, वह जरूर मदद करेगें।'' बच्चा तीन महीने से स्कूल नहीं जा रहा यह तो बहुत दुःख की बात है।

शमीम भी समूह सदस्य है ने कहा – ''उसके पिता को भी उन योजनाओं की जानकारी नहीं होगी।''

मो0 रिजाउल – ''हमारे लोग बहुत कम जानकारी रखते हैं फिर पंचायत का बार–बार चक्कर लगाना भी सब के वश की बात नहीं है।''
शमीम – ''सो तो है पर जरूरत है तो जाना ही पडेगा।''
अगले दिन सोहराब, मो0 रिजाउल और शमीम गर्री के पंचायत मुखिया सिकंदर कपरदार के पास गए और इसकी जानकारी देते हुए एक आवेदन दिया। सबने आग्रह

किया कि सरकार से मिलने वाली ट्राई साइकिल दिला दें। गर्री पंचायत के मुखिया ने इस पर तुरन्त पहल करने और अपना पूरा प्रयास करने का आश्वासन दिया।

12 अगस्त 2018 को साइकिल खरीदने की राशि इब्राहिम के बैंक खाते में आ गयी और साइकिल मिल गयी। अब वह रोज खुशी–खुशी स्कूल जाता है।

यह एक महत्वपूर्ण पहल मुखिया और बनकनारी के एनिमेटर एवं समूह के सदस्यों की ओर से किया गया जिससे एक बच्चें की मुस्कान वापस लौटी और शिक्षा का दीप चला।

नई परम्परा की शुरूआत

सुनील यादव चिल्दिरी गांव, रांची का रहने वाला है। सुनील की उम्र 28 साल है और अभी शादी नही हुई है। वह अपने माता–पिता और भैया–भाभी के साथ रहता है। सुनील 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम में पिता समूह के साथ साल 2016 से ही जुड़ा है।

पिता समूह की बैठकों में भाग लेना, शैक्षणिक सत्रों में अपना पक्ष रखना तथा गांव में दूसरे लड़के और पुरूषों को बताना उसे अच्छा लगता है। उसने घर के छोटे–छोटे कामों जैसे झाड़ू लगाना, खाना बनाना, अपने कपड़े खुद साफ करना आदि से बदलाव की शुरूआत की है।

रक्षा बंधन के दो दिन पहले यानि 24 सितम्बर 2018 को फैसिलिटेटर अमित ने सभी एनिमेटर व समूह से जुड़े सदस्यों को व्हाट्सअप में एक संदेश भेजा– ''इस साल रक्षा बंधन में अपनी बहनों से राखी बंधवाने के बाद उनको उपहार देने के जगह हम सब अपनी बहनों को भी राखी बांध कर जेंडर समानता की ओर एक नई शुरूआत कर सकते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि रक्षा बंधन के नाम पर समाज हमेशा पुरूषों को बहनों के रक्षक की भूमिका में देखता है। रक्षक बनने का संबंध पुरूषों की मर्दानगी से है। इस रक्षा बंधन पर हम इन पितृसत्तात्मक मान्यताओं को बदलते हुए बहनों को राखी बांधते हुए बहनों को सक्षम बनने में सहयोग करें ताकि मुसीबत के समय वो खुद अपनी रक्षा कर सकें।'' धन्यवाद।

अपनी दोनों बड़ी बहनों को राखी बांधने के बाद, 26 सितम्बर 2018 को सुनील ने व्हाट्सअप में मैसेज लिखा – ''जीवन में पहली बार अपनी बहनों को राखी बांधने का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा और मैं बहुत खुश हूँ। हम सब अपनी बहनों को इतना सक्षम बनाएं कि वो खुद अपनी रक्षा कर सकें और आत्मनिर्भर बन सकें।''

हमारे अनुभव.....

मेरे लिए समुदाय में किसी भी तरीके का हस्तक्षेप का यह पहला अनुभव था। पुरूषों को एक मंच में जेंडर समानता के लिए लाना और अपनी सुविधाएं छोड़ने के लिए प्रेरित करना, सोचने से ही बहुत चुनौतीपूर्ण लगता था। हमारा समाज महिलाओं एवं किशोरियों को बंधन में रखना चाहता है और पुरूषों को खुली छूट देता है। अनेक पुरूष हैं जो बदलना चाहते हैं, बच्चों के साथ खेलना चाहते हैं, घरो के अंदर खुशी चाहते हैं पर सामाजिक दबाव के कारण ऐसा नहीं कर पाते। इन्हें किसी के साथ की जरूरत थी जो हमने दिया। अब पुरूषों का ऐसे समूह तैयार हो रहे हैं जो महिलाओं और बच्चों के साथ किसी भी तरीके के भेदभाव एवं हिंसा के खिलाफ अपनी चुप्पी तोड़ने के लिए तैयार हैं और वे अपनी सुविधाएं छोड़ने के लिए भी तैयार हैं।

अमित कुमार सिंह
फैसिलिटेटर, सृजन फाउंडेशन, रांची

इस कार्यक्रम में पुरूषों के साथ काम करना काफी चुनौती भरा था। मैं, पिता और किशोर समूहों के बीच गांव में लगातार बैठकों के माध्ययम से यह कार्य सहजता के साथ कर पाया। समाज के पुराने रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ने व उनके प्रति जागरूकता लाने की पहल अभी भी जारी है। समूह सदस्यों के बीच लगातार चर्चा से उनमें बदलाव देखने को मिल रहा है। घरेलू कामों में पुरूषों की भागीदारी बढ़ने से महिलाओं के कार्यबोझ कम होने लगा है तथा परिवार के अंदर बच्चों व पार्टनर के बीच रिश्ते मजबूत होने लगे हैं। समूह के साथ गांव के अन्य लोग भी जागरूक हो रहें हैं। इस कार्यक्रम से मेरा अनुभव भी बढ़ा है और मैं अपने अंदर भी बदलाव ला पाया। अब लोगों के अंदर बदलाव देखकर मुझे काफी खुशी मिलती है।

धीरज कुमार
फैसिलिटेटर, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ, गुमला

जेंडर समानता पर कार्य करने का मेरा यह पहला अनुभव था। यह अवसर सहयोगिनी एवं सी.एच.एस.जे. नई दिल्ली से मुझे मिला। महिला–पुरूष बराबरी युक्त समाज स्थापित करने के लिए पितृसत्ता को हटाना जरूरी है। पिछले तीन सालों में कसमार प्रखंड के दस गांव में 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम से जेंडर समानता की दिशा में पुरूषों ने काफी बदलाव किया है जिससे क्षेत्र में महिला हिंसा, भेदभाव, बाल–विवाह एवं महिला–पुरूष गैर बराबरी कम हुई है।

शेखर शरदेन्दु
फैसिलिटेटर, सहयोगिनी–बोकारो

सहभागी संस्थायें

फेम (फोरम टू इन्गेज मेन)– झारखण्ड

फेम–झारखण्ड संगठनों का एक समूह है जो 2012 से झारखण्ड में पुरूषों एवं लड़कों के साथ जेन्डर सामानता, जेन्डर आधारित भेदभाव तथा महिला हिंसा दूर करने एवं बाल अधिकार सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है। फेम वर्तमान में झारखण्ड के 13 जिलों में 21 संस्थाओं के साथ कार्य कर रही है। प्रत्येक जिले में समानता साथियों का चुनाव कर उनके साथ लगातार एक प्रक्रिया में रहने तथा समानता लाने के लिए अभियान भी चलाया जा रहा है। अन्य संस्थाए, नेटवर्क, शिक्षाविद, मीडिया तथा बुद्धिजीवी भी इस संगठन से जुड़े हैं।

छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ –

छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ एक सामाजिक–सांस्कृतिक संस्था है जो सोसायटी निबधंन अधिनियम 1860 के अर्न्तगत पंजीकृत है। अपने स्थापना काल 1968 से लेकर अब तक संस्था ने झारखण्ड के सामाजिक, आर्थिक मुद्दों पर महिलाओं, बच्चों, वंचित समुदाय, दिव्यांगजन एवं समाज के अन्य पिछड़े तबके के लिए प्रतिबद्धता के साथ काम करती आ रही है। झारखण्ड की भाषा–संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन विकास में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समानता, सानिद्धता, भागीदारी एवं सहयोग इसके मुख्य सिद्धांत है।

हमारा विश्वास ''हम लोगों की मदद करते हैं ताकि लोग खुद अपनी मदद कर सकें''

सहयोगिनी –

ज्ञान, शोध एवं उपलब्ध संसाधन द्वारा प्रारंभिक सहायता प्रदान कर एक सशक्त, स्वावलम्बी एवं समतामूलक समाज का निर्माण तथा विकास करना सहयोगिनी का लक्ष्य है। सहयोगिनी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए झारखण्ड के बोकरो, धनबाद एवं रांची जिले में किशोर–किशोरी, महिला–पुरूषों के साथ ग्रामीण–शहरी क्षेत्र में कार्य करती है।

सृजन फाउंडेशन

सृजन फाउंडेशन एक स्वयंसेवी संस्था है जिसकी स्थापना सन् 2001 में ग्रामीण विकास कार्य से जुड़े प्रोफेशनल्स द्वारा किया गया। संस्थान का मुख्य उद्देश्य एक सशक्त, लिंगभेद रहित एवं आदर्श समाज का निर्माण करना है। संस्था महिला, किशोरी और बच्चों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाने के मूल उद्देश्य पर प्रयासरत है। अपने इसी प्रयास के अंर्तगत संस्था रांची जिला के बेड़ो प्रखण्ड के 10 गांवों में 'समझदार जीवनसाथी–जिम्मेदार पिता' कार्यक्रम का क्रियान्वयन कर रही है। संस्था वर्तमान में झारखण्ड के 10 जिलों (रांची, हजारीबाग, रामगढ़, गुमला, लोहरदगा, पलामू, गढ़वा, पश्चिम सिंहभूम एवं पाकुड़) में सीधे रूप से कार्य कर रही है तथा सम्पूर्ण झारखण्ड राज्य में नेटवर्क संस्थाओं के साथ जुड़कर महिला अधिकार, बाल अधिकार, बाल संरक्षण एवं मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर कार्यरत है।